

ट्रंप की बेबाकी काबिल-ए-गौर

ट्रंप की सोच शायद यह है कि जिसके पास शक्ति है, उसका सम्मान होना चाहिए। इस सोच का ही दूसरा पक्ष है कि जो कमजोर है, उससे इस बात की कीमत अवश्य वसूली जानी चाहिए। डॉनल्ड ट्रंप की बेबाकी काबिल-ए-गौर है। संयुक्त राष्ट्र महासभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा- ‘बीते जनवरी में मेरे निर्देश पर अमेरिकी सेना ने वेनेजुएला की राजधानी के अंदर तक जाकर जबरदस्त सैन्य कार्रवाई की।’ यह युद्ध था। (पराजित पक्ष) का सारा माल विजेता का हो जाता है।’ इसके पहले कह चुके थे कि पिछले महीने अमेरिका ने वेनेजुएला के साथ ‘इतिहास का सबसे बड़ा तेल सौदा’ किया। विश्लेषकों ने इस बयान को संयुक्त राष्ट्र चार्टर का उल्लंघन बताया है। वैसे ट्रंप ने अपने भाषण में ईरान और क्यूबा को लेकर भी धमकी भरी ऐसी बातें कहीं, जो संयुक्त राष्ट्र चार्टर की विभिन्न धाराओं की धज्जी उड़ाती मालूम पड़ीं। संयुक्त राष्ट्र के मंच पर जाकर इस विश्व संस्था की बेकद्री करने की ऐसी मिसाल इसके पहले शायद ही मिलेगी! लेकिन यही ट्रंप की पहचान है। वे खुद को और अमेरिका को किसी नियम-कायदे, संधि और मर्यादा से बंधा नहीं मानते। संभवतः वे सिर्फ एक सिद्धांत जानते हैं- और वह है शक्ति। यानी जिसके पास ताकत है, वही आदरणीय है। और इसकी ताजा मिसाल उन्होंने शी जिनिपिंग के स्वागत के लिए सबसे अलग किस्म की ‘लाल कालीन बिछा कर’ पेश की है। चीन के राष्ट्रपति को अमेरिका यात्रा (23-25 सितंबर) के दौरान ट्रंप ने प्रोटोकॉल से आगे जाकर स्वागत करने और चमकदार, भव्य आयोजनों का जो कार्यक्रम बनाया है, उसे देख कर शायद चीनी विश्लेषक भी हैरत में पड़ेंगे। जब अमेरिका और चीन की होड़ भू-राजनीति के सारे समीकरणों के केंद्र में है, ट्रंप के शी के प्रति इस झुकाव का तर्क अमेरिकियों को भी समझ में नहीं आया है। इसकी तुलना सिर्फ चार महीने पहले ट्रंप की हुई बीजिंग यात्रा से की गई है, जब चीन ने प्रोटोकॉल के अनुरूप ही उनका स्वागत किया था। वैसे, ट्रंप- शी की द्विपक्षीय आधिकारिक वार्ता से ज्यादा कुछ हासिल होगा, इसकी संभावनाएं भी कम ही हैं। मगर ट्रंप की सोच शायद यह है कि जिसके पास शक्ति है, उसका सम्मान होना चाहिए। इस सोच का ही दूसरा पक्ष है कि जिसके पास ताकत नहीं है, उससे इस बात की कीमत अवश्य वसूली जानी चाहिए!

राशिफल

मे़ष राशि: मे़ष राशि वालों आज का दिन आपके लिए खुशख़ल रहने वाला है। आज आपका ध्यान अपने काम को पूरा करने में लगेगा, आपके अधिकतर काम सफल होंगे। आज आप बुजुर्गों की सेवा का लाभ उठावेंगे, उनके आशीर्वाद से आपके जीवन में चल रही समस्याएं ख़त्म होंगी।

वृ़षभ राशि: वृ़ष राशि वालों आज का दिन आपके लिए शानदार रहेगा। आज आप व्यापार में अच्छा लाभ कमावेंगे, जिससे आपके सपने जल्द ही पूरे होंगे। आज आपका दाम्पत्य जीवन खुशनुमा बना रहेगा, बच्चे भी मन लगाकर पढ़ाई करेंगे। आज आप कुछ वक्त अस्थाल में बितावेंगे, आपके मन को शांति मिलेगी।

मिथुन राशि: मिथुन राशि वालों आज का दिन आपके लिए पॉजिटिव बना रहेगा। आज आपको लौकरी में किसी बड़ी कंपनी से ऑफ़र आएगा और आपका इंटरव्यू भी विलयव हो जायेगा। आज आपको किसी शारीरिक समस्या से छुटकारा मिलेगा, जिससे आपका मन प्रसन्न होगा। आज आप कोई नया नुसकाम हासिल करने में सफल रहेंगे, आपकी प्रशंसा होगी।

कर्क़ राशि: कर्क़ राशि वालों आज का दिन आपके लिए ठीक रहने वाला है। आज आपको रोजगार के नए अवसर प्राप्त होंगे, जिससे आपकी आर्थिक समस्या ख़त्म होगी। आज आपके कानूनी मामलों किसी की मदद से सुलझ जायेंगे, आप राहत महसूस करेंगे।

सिंह राशि: सिंह राशि वालों आज का दिन आपके लिए अच्छा रहेगा। आज आप सामाजिक कार्यों में स़्थ बढावेंगे, जिससे आपकी छवि अच्छी बनेगी। इस राशि के अविवाहित व्यक्तियों को विवाह प्रस्ताव मिल सकता है। आज आप किसी सरकारी योजना का लाभ लेने में सफल रहेंगे। आज आप प्रॉपर्टी में इन्वेस्ट करने का प्लान बना सकते हैं।

कन्या राशि: कन्या राशि वालों आज का दिन आपके अनुकूल बना रहेगा। आज आप किसी भी काम को शांत मन और गंभीरता के साथ करेंगे तो आपको उसमें सफलता अवश्य मिलेगा। आज आप अपने काम को आगे बढ़ाने के लिए, उसकी नयी ग़ांव ओपन कर सकते हैं।

तुला राशि: तुला राशि वालों आज का दिन आपके लिए उत्तम रहने वाला है। आज आपके कारोबार में उन्नति होगी, नौतिक सुख-सुविधाओं में बढ़ोतरी होगी। आज आपका स्वास्थ्य ठीक रहेगा, आप ऊर्जा में भरपूर रहेंगे। आज आप दोस्तों के साथ बाहर घूमने की प्लानिंग कर सकते हैं, आपको अच्छा लगेगा। आज किसी को दिया हुआ धन आपको वापस मिलेगा।

वृश्चिक राशि: वृश्चिक राशि वालों आज का दिन आपके लिए मिला-जुला रहेगा। आज आप कोशिश करें, की किसी भी बात के ऊपर बिना सोचे समझें रिपेट न करें। इससे आपके रिश्ते सुगम हो सकते हैं। आज आप अपने आत्मविश्वास को कम न होने दें, आपको अच्छे परिणाम प्राप्त होंगे।

धनु राशि: धनु राशि वालों आज का दिन आपके लिए शानदार रहने वाला है। आज आप जीवनसाथी के साथ शॉपिंग करने मार्केट जा सकते हैं। साथ ही किसी अच्छे रेस्टॉरेंट में खाना भी खावेंगे। आज कई दिनों से अटका हुआ आपका काम पूरा हो जायेगा।

मकर राशि: मकर राशि वालों आज का दिन आपके लिए ठीक-ठाक रहेगा। आज आपकी सहायता से किसी व्यक्ति का काम बन जायेगा। आज आप नए अवसरों की तलाश में बाहर निकलेगें, जहां आपको कई बेहतरीन मौक़े मिलेंगे। आज आपको ससुराल पक्ष से खुशख़बरी मिलेगी, जिससे घर का माहौल अच्छा रहेगा।

कुंभ राशि: कुंभ राशि वालों आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है। आज आपको व्यापारिक रिश्तों का बड़ा लाभ मिलेगा। साथ ही आप कुछ नया काम भी शुरू कर सकते हैं। आज आपका देादिक जीवन सुखमय रहेगा, आपको किसी रिश्तेदार से शुभ समाचार मिलेगा। आज आपका मन अस्थाल में लगेगा, आपको मानसिक शांति मिलेगी।

मीन राशि: मीन राशि वालों आज का दिन आपके लिए पहले से बेहतर रहेगा। आज आम नए करें, जिसे करने से आपको खुशी प्राप्त हो। आज आप किसी सामाजिक समारोह में शामिल होंगे, जहां आपका मान सम्मान होगा। आज आपकी स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान होगा, आप खुद को एनर्जी से भरा हुआ पावेंगे।

राष्ट्र भक्ति की अलख जगाता दैनिक

राष्ट्रीय गरिमा



राष्ट्र एक बगीचा है और हम सब इसके माली

मोपाल, शनिवार 10 अक्टूबर 2026

www.rashtriyagarima.com

04

आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना

आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (एबी-पीएमजेएवाई) देश की स्वास्थ्य सेवा व्यवस्था में आर्थिक सुरक्षा का प्रमुख आधार बनकर उभरी है। योजना के तहत आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को प्रति परिवार प्रतिवर्ष 5 लाख रुपये तक का नि:शुल्क और कैशलेस अस्पताल उपचार उपलब्ध कराया जाता है। योजना की आठवीं वर्षगांठ के अवसर पर 21 सितंबर 2026 तक देश की लगभग 33 प्रतिशत आबादी यानी 48.51 करोड़ से अधिक लोगों के आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं। वहीं, 31 अगस्त 2026 तक योजना के तहत 13.25 करोड़ से अधिक अस्पताल दाखिलों के लिए 2.03 लाख करोड़ रुपये की राशि का वित्तपोषण किया जा चुका है। एबी-पीएमजेएवाई के तहत देशभर के 38 हजार से अधिक सुचीबद्ध सरकारी और निजी अस्पतालों के नेटवर्क के माध्यम से लाभार्थियों को द्वितीयक और तृतीयक स्तर की स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं। योजना का उद्देश्य गंभीर बीमारी और महंगे उपचार के कारण परिवारों को आर्थिक संकट और भारी चिकित्सा ऋण से बचना है। सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज की दिशा में महत्वपूर्ण कदम भारत सरकार ने सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज के लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए 23 सितंबर 2018 को आयुष्मान भारत-प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना की शुरुआत की थी। यह दुनिया की सबसे बड़ी सार्वजनिक स्वास्थ्य सुरक्षा योजनाओं में शामिल है। योजना के तहत 27 चिकित्सा विशेषज्ञताओं में 1,961 उपचार प्रक्रियाओं के लिए कैशलेस स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध हैं। आयुष्मान भारत के तहत एबी-पीएमजेएवाई के साथ आयुष्मान आरोग्य मंदिर, आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन और प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन (पीएम-अभिम) मिलकर देश की स्वास्थ्य व्यवस्था को व्यापक आधार प्रदान कर रहे हैं। इन योजनाओं के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल से लेकर अस्पताल में उपचार, डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं और आधुनिक स्वास्थ्य अवसंरचना तक स्वास्थ्य सेवाओं की पूरी श्रृंखला को मजबूत किया जा रहा है। आशा और आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को भी मिला लाभ सरकार ने मार्च 2024 में एबी-पीएमजेएवाई का विस्तार करते हुए मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं (आशा), आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और आंगनवाड़ी सहायिकाओं के लगभग 37 लाख परिवारों को योजना में शामिल किया था। 21 सितंबर 2026 तक इन वर्गों के लिए 44.81 लाख से अधिक आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं। इसके अलावा 11 सितंबर 2024 को योजना का विस्तार 70 वर्ष और उससे अधिक आयु के सभी वरिष्ठ नागरिकों तक किया गया। इससे लगभग 6 करोड़ वरिष्ठ नागरिकों को स्वास्थ्य सुरक्षा कवच मिला है। 21 सितंबर 2026 तक 1.36 करोड़ से अधिक वरिष्ठ नागरिकों के आयुष्मान वय वंदना कार्ड बनाए जा चुके हैं। ग्रामीण और शहरी गरीबों को लक्षित कवरेज



योजना के पात्र लाभार्थियों की पहचान सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना-2011 में निर्धारित अभाव और व्यावसायिक मानदंडों के आधार पर की जाती है। इसमें राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना के अंतर्गत पहले से शामिल परिवार भी आते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ऐसे परिवार पात्र हैं जिनके पास कच्ची दीवार और कच्ची छत वाला केवल एक कमरा है, जिनमें 16 से 59 वर्ष की आयु का कोई वयस्क सदस्य नहीं है, महिला मुखिया वाले परिवार जिनमें 16 से 59 वर्ष की आयु का कोई वयस्क पुरुष सदस्य नहीं है, दिव्यांग सदस्य वाले ऐसे परिवार जिनमें कोई सक्षम वयस्क सदस्य नहीं है, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के परिवार तथा भूमिहीन परिवार जिनकी आय का प्रमुख स्रोत दिहाड़ी मजदूरी है। शहरी क्षेत्रों में कूड़ा बीनने वालों, भिखारियों, घरेलू कामगारों, सड़क पर सामान बेचने वालों, मोचियों, फेरीवालों, निर्माण श्रमिकों, प्लंबर, राजमिस्त्री, मजदूरों, पेंटर, वेल्डर, सुरक्षा गार्ड, कुली, सफाईकर्मियों, माली, कारीगरों, दर्जियों, परिवहन श्रमिकों, चालकों, परिचालकों, रिक्शा चालकों, दुकान कर्मचारियों, डिलीवरी सहायकों, वेटरों, बिजली मिस्त्रियों, मैकेनिकों, धोबियों और चौकीदारों सहित विभिन्न श्रमिक वर्गों को पात्रता दी गई है। विशेष श्रेणियों को भी स्वास्थ्य सुरक्षा सरकार ने विभिन्न विशेष पहलों के माध्यम से योजना का दायरा और व्यापक किया है। भवन एवं अन्य निर्माण श्रमिक और उनके आश्रित, पीएम-राहत के तहत सड़क दुर्घटना पीड़ित, स्माइल पहल के तहत पात्र ट्रांसजेंडर व्यक्ति, पीएम केयर्स फॉर चिल्ड्रन योजना के पात्र बच्चे, नमस्ते योजना के तहत पहचाने गए कचरा बीनने वाले और सफाईकर्मी तथा प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान के तहत विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूहों को भी स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान की जा रही है। समय पर उपचार से बुजुर्ग महिला को

मिली राहत योजना के प्रभाव का उदाहरण हरियाणा के जौंद जिले की 65 वर्षीय बीरमती का मामला है। उनके जांच की हड्डी के ऊपरी हिस्से, जिसे फीमर की गर्दन कहा जाता है, में गंभीर फ्रैक्चर हो गया था। आयुष्मान भारत योजना के माध्यम से उन्हें जिला आर्थोपेडिक एवं मातृत्व अस्पताल में 44,140 रुपये मूल्य का उपचार और समय पर सर्जरी बिना किसी शुल्क के उपलब्ध कराई गई। इस तरह की सहायता आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के लिए जीवनरक्षक साबित हो रही है। केंद्र और राज्यों के बीच साझा वित्तपोषण एबी-पीएमजेएवाई केंद्र प्रायोजित योजना है। अधिकांश राज्यों में केंद्र और राज्य सरकार के बीच वित्तपोषण का अनुपात 60:40 है। पूर्वोत्तर राज्यों, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और जम्मू-कश्मीर में यह अनुपात 90:10 है। बिना विधानमंडल वाले केंद्रशासित प्रदेशों में केंद्र सरकार 100 प्रतिशत वित्तपोषण करती है, जबकि विधानमंडल वाले केंद्रशासित प्रदेशों में केंद्र और केंद्रशासित प्रदेश के बीच 60:40 के अनुपात में राशि साझा की जाती है। वर्ष 2026-27 के लिए योजना के तहत 9,500 करोड़ रुपये के बजट का प्रावधान अनुमानित है। सरकारी वित्तपोषण बढ़ने और नि:शुल्क तथा कम लागत वाली स्वास्थ्य योजनाओं के विस्तार से लोगों के अपनी जेब से होने वाले स्वास्थ्य खर्च में भी कमी आई है। आयुष्मान आरोग्य मंदिरों से गांवों तक पहुंची प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा आयुष्मान भारत का दूसरा प्रमुख स्तंभ आयुष्मान आरोग्य मंदिर है। इन केंद्रों के माध्यम से प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को लोगों के घरों और समुदायों के करीब पहुंचाया जा रहा है। मौजूदा स्वास्थ्य केंद्रों को उन्नत कर इन केंद्रों में बेहतर अवसंरचना, अतिरिक्त मानव संसाधन, आवश्यक दवाएं, जांच सुविधाएं और सूचना प्रौद्योगिकी व्यवस्था उपलब्ध कराई गई है।

शारदीय नवरात्र: मां दुर्गा की शक्ति और उपासना का महापर्व

कुमार कृष्ण

शक्ति की आराधना केवल देवी के किसी रूप के सामने सिर झुकाने का नाम नहीं है। भारतीय लोकजीवन में शक्ति उस चेतना का नाम भी है, जो संकट के समय मनुष्य को भीतर से खड़ा करती है। शारदीय नवरात्र इसी शक्ति की उपासना का पर्व है। नौ रातों तक देवी के नौ रूपों की आराधना के बीच मुंगेर का चंडिका स्थान अपनी अलग आध्यात्मिक और सांस्कृतिक पहचान के साथ सामने आता है। गंगा के किनारे, रमशान की निकटता और लोकविश्वास की गहरी जड़ों के बीच स्थित यह स्थल श्रद्धा, साधना और शक्ति की एक ऐसी परंपरा को अपने भीतर समेटे हुए है, जिसकी स्मृति सदियों से लोकमानस में चली आ रही है। मुंगेर शहर से लगभग चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित चंडिका स्थान को स्थानीय परंपरा में शक्तिपीठ माना जाता है। मान्यता है कि भगवान शिव जब सती के जले हुए शरीर को लेकर विचरण कर रहे थे, तब सती की बाईं आंख यहां गिरी थी। इसी कारण इस स्थान का संबंध शक्ति की उपासना से जोड़ा जाता है। शक्तिपीठों की संख्या और उनके संबंध में विभिन्न धार्मिक परंपराओं में अलग-अलग मान्यताएं मिलती हैं। चंडिका स्थान की पहचान भी इसी लोकपरंपरा और आस्था से निर्मित हुई है। यहां देवी को चंडिका के रूप में पूजा जाता है। चंडी शक्ति का वह उग्र रूप है, जो केवल विनाश का प्रतीक नहीं, बल्कि अधर्म और अराजकता के विरुद्ध प्रतिरोध की ऊर्जा का भी प्रतीक है। शारदीय नवरात्र में इस अर्थ की प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। चंडिका स्थान की विशेषता उसकी भौगोलिक स्थिति भी है। मंदिर के पूर्व और पश्चिम में रमशान और समीप बहती गंगा ने इस स्थल को एक विशिष्ट आध्यात्मिक वातावरण दिया है। जीवन और मृत्यु, सृजन और विनाश, आस्था और वैराग्य—इन विरोधी प्रतीत होने वाले तत्वों का एक साथ उपस्थित होना इस स्थान को साधना की दृष्टि से अलग पहचान देता है। यही कारण है कि लोकमान्यता में चंडिका स्थान को तंत्र-साधना का भी महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता है और नवरात्र में विभिन्न स्थानों से साधक यहां आते हैं। मंदिर में पूजा की परंपरा भी विशिष्ट है। नवरात्र के दौरान प्रातःकाल से ही पूजा-अर्चना आरंभ हो जाती है और संध्या में श्रृंगार पूजन होता है। अष्टमी के दिन विशेष पूजा होती है। उस दिन देवी का विशेष श्रृंगार किया जाता है और बड़ी संख्या में श्रद्धालु यहां पहुंचते हैं। मुंगेर के साथ-साथ खगड़िया और बेगूसराय सहित आसपास के क्षेत्रों से भी श्रद्धालुओं की संख्या बढ़ जाती है। चंडिका स्थान से जुड़ी सबसे प्रसिद्ध लोककथाओं में महाभारत के कर्ण और उज्जैन के राजा विक्रमादित्य की कथा है। लोकविश्वास के अनुसार कर्ण देवी चंडिका के परम भक्त थे। वे प्रतिदिन गंगा स्नान के बाद देवी की आराधना करते और खीलते हुए तेल की कड़ाही में कूदकर अपने प्राण अर्पित कर देते। देवी उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर उन्हें जीवन्मदान देतीं और सोना प्रदान करतीं। कर्ण उस सोने को मुंगेर के कर्ण चौरा में ले जाकर लोगों के बीच बांट देते थे। लोककथा आगे बताती है



कि इस रहस्य की जानकारी उज्जैन के राजा विक्रमादित्य को हुई। वे स्वयं चंडिका स्थान पहुंचे और इस अद्भुत दृश्य को देखा। एक दिन उन्होंने कर्ण से पहले मंदिर पहुंचकर देवी की परीक्षा लेने का प्रयास किया। वे भी खीलते हुए तेल की कड़ाही में कूदे। देवी ने उन्हें जीवन्मदान दिया। ऐसा तीन बार हुआ। चौथी बार जब विक्रमादित्य कड़ाही में कूदने लगे तो देवी ने उन्हें रोक दिया और वरदान मांगने को कहा। उन्होंने सोना देने वाला थैला और अमृत कलश मांगा। लोकविश्वास है कि उनकी इच्छा पूरी करने के बाद देवी ने कड़ाही को उलट दिया और उसमें अंतर्ध्यान हो गई। मंदिर में आज भी उस कड़ाही से जुड़ी परंपरा का स्मरण किया जाता है। इस कथा का धार्मिक अर्थ जितना महत्वपूर्ण है, उससे कम महत्वपूर्ण इसका लोकनैतिक अर्थ नहीं है। कर्ण की कथा में शक्ति पाने से अधिक महत्वपूर्ण है शक्ति का लोककल्याण में उपयोग। यदि प्राप्त संपदा केवल स्वयं के लिए हो तो वह शक्ति नहीं, संग्रह है। कर्ण के प्रसंग में लोकस्मृति उस संपदा को बांटने और दूसरों के जीवन में उपयोग करने की बात करती है। शायद इसी कारण कर्ण की कथा चंडिका की आराधना से जुड़कर शक्ति को दान और लोककल्याण के अर्थ से जोड़ देती है। चंडी के स्वरूप को लेकर परमहंस स्वामी निरंजनानंद सरस्वती की व्याख्या इस लोकविश्वास को एक व्यापक आध्यात्मिक अर्थ देती है। उनके अनुसार चंडी देवी का आक्रामक पहलू है। जब मानवीय और दैवीय प्रयास अपनी सीमा तक पहुंच जाते हैं, तब चंडी की शक्ति प्रकट होती है। दुर्गासप्तशती की कथा में देवताओं और असुरों के संघर्ष की पृष्ठभूमि में यही भाव सामने आता है। देवताओं की शक्तियां जब अकेले असुरों का सामना करने में असमर्थ होती हैं, तब विभिन्न देवशक्तियों के तेज से एक नई शक्ति का

प्राकट्य होता है। चंडी इसलिए केवल किसी बाहरी शत्रु के विनाश की कथा नहीं हैं। वे मनुष्य के भीतर की उस शक्ति का भी प्रतीक हैं, जो निराशा और असहायता के क्षण में जागती है। नवरात्र की साधना का अर्थ इसी आंतरिक जागरण से भी है। नौ रातें केवल उपावास, पूजा और अनुष्ठान की रातें नहीं हैं। वे अपने भीतर झांकने, अपनी कमजोरियों को पहचानने और जीवन में संतुलन स्थापित करने का अवसर भी हैं। चंडिका स्थान की आस्था में आंख गिरने की कथा भी प्रतीकात्मक अर्थ रखती है। आंख केवल देखने का माध्यम नहीं है। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में दृष्टि ज्ञान और विवेक से भी जुड़ी है। यदि लोकविश्वास में सती की बाईं आंख यहां गिरी, तो उसे केवल एक पौराणिक घटना के रूप में देखने के बजाय शक्ति की दृष्टि के प्रतीक के रूप में भी समझा जा सकता है—ऐसी दृष्टि जो संसार को केवल बाहरी रूप में नहीं, उसके भीतर छिपे सत्य के साथ देखती है। चंडिका स्थान से जुड़े श्रद्धालुओं के बीच यह विश्वास भी प्रचलित है कि यहां देवी के दर्शन और पूजा से आंखों से संबंधित समस्याओं में लाभ होता है। मंदिर में विशेष काजल की परंपरा भी बताई जाती है। ऐसे विश्वास धार्मिक आस्था और लोकचिकित्सा की परंपराओं का हिस्सा हैं। इन्हें आधुनिक चिकित्सा के विकल्प के रूप में नहीं, बल्कि लोकविश्वास के रूप में समझना अधिक उचित है। इस शक्तिपीठ की एक और विशिष्टता यह है कि यहां तंत्र-साधना की परंपरा को कामाख्या से जोड़कर देखा जाता है। गंगा और रमशान की निकटता ने इस स्थान को तांत्रिक कल्पना को और गहरा किया है। रमशान भारतीय साधना परंपरा में केवल मृत्यु का स्थान नहीं, बल्कि जीवन की क्षणभंगुरता का स्मरण कराने वाला स्थल भी है।

चंडिका की उपासना और रमशान की निकटता मिलकर मनुष्य को उस सत्य के सामने खड़ा करती है, जिससे वह सामान्य जीवन में बचता रहता है—जीवन नश्वर है और शक्ति का अर्थ केवल विजय नहीं, बल्कि विवेक भी है। चंडिका स्थान का इतिहास केवल लोककथाओं और धार्मिक परंपराओं तक सीमित नहीं है। पिछले दशकों में इसके विकास के प्रयास भी हुए हैं। मंदिर के विकास में रायबहादुर केदाननाथ गोयनका और बाद में श्याम सुंदर भंगड़ के योगदान का उल्लेख स्थानीय स्तर पर किया जाता है। सामाजिक दायित्व के तहत आईटीसी की ओर से भी मंदिर परिसर के विकास में सहयोग किया गया है। अब पर्यटन विभाग की ओर से चंडिका स्थान के सौंदर्यीकरण और विकास की योजना पर काम किया जा रहा है। लगभग 4.18 करोड़ रुपये की लागत से धर्मशाला, बहुउद्देशीय सभागार, मुख्य प्रवेश द्वार से गर्भगृह तक पथवे, चाहरदीवारी, सीसीटीवी, बैटने की व्यवस्था, हाईमास्ट लाइट, प्राथमिक उपचार कक्ष तथा जलनिकासी और वर्षाजल संचयन जैसी सुविधाएं विकसित किए जाने की योजना है। ऐसे विकास कार्यों की सफलता का वास्तविक पैमाना केवल भवन और प्रवेश द्वार नहीं होंगे। असली कसौटी यह होगी कि श्रद्धालुओं की सुविधा बढ़े, मंदिर की आध्यात्मिक गरिमा बनी रहे और आसपास का पर्यावरण भी सुरक्षित रहे। शारदीय नवरात्र में जब चंडिका स्थान में भक्तों की भीड़ बढ़ती है, तब यह सवाल भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि धार्मिक पर्यटन और आस्था के विस्तार के साथ स्थानीय पर्यावरण, गंगा और मंदिर की सांस्कृतिक पहचान को कैसे बचाया जाए। किसी तीर्थ का विकास केवल उसके पथर और सीमेंट का विकास नहीं होता। उसकी आत्मा उसके लोकविश्वास, परंपरा, प्रकृति और लोगों के साथ उसके संबंध में होती है। चंडिका स्थान इसी अर्थ में केवल एक मंदिर नहीं है। यह मुंगेर की सांस्कृतिक स्मृति का हिस्सा है। यहां कर्ण की लोककथा है, विक्रमादित्य की आस्था है, गंगा है, रमशान है, तंत्र-साधना की परंपरा है और नवरात्र में उमड़ता लोकविश्वास है। सबसे ऊपर चंडी की वह कल्पना है, जो मनुष्य को याद दिलाती है कि शक्ति का उद्देश्य केवल शक्तिशाली बनना नहीं, बल्कि शक्ति का उपयोग सत्य, न्याय और लोककल्याण के लिए करना है। शारदीय नवरात्र की नौ रातों में देवी के अलग-अलग रूपों की आराधना करते हुए शायद चंडिका स्थान हमें यही सबसे बड़ा संदेश देता है—शक्ति बाहर किसी मंदिर में जितनी है, उतनी ही मनुष्य के भीतर भी है। सवाल यह है कि हम उस शक्ति का उपयोग किसके लिए करते हैं। अगर शक्ति केवल अपने लिए है तो वह अहंकार बन सकती है। लेकिन वही शक्ति जब कमजोर के साथ खड़ी होती है, अन्याय के सामने आवाज बनती है और समाज में संतुलन स्थापित करती है, तब वह चंडी की वास्तविक चेतना बन जाती है। यही चंडिका स्थान की लोकस्मृति का सबसे आधुनिक और सबसे मानवीय अर्थ है।



कन्या के पिता के लिए धैर्य धरना थोड़ा-बहुत संभव भी था; परन्तु वर के पिता पल भर के लिए भी सन्न करने को तैयार न थे। उन्होंने समझ लिया था कि कन्या के विवाह की आयु पार हो चुकी है; परन्तु किसी प्रकार कुछ दिन और भी पार हो गये तो इस चर्चा को भद्र या अभद्र किसी भी उपाय से दबा रखने की क्षमता भी समाप्त हो जायेगी? कन्या की आयु अवैध गति से बढ़ रही थी, इसमें किसी को शंका करने की आवश्यकता बड़ी नहीं; किन्तु इससे भी बड़ी शंका इस बात की थी कि कन्या की तुलना में देहेज की रकम अब भी काफी अधिक थी। वर के पिता इसी हेतु इस प्रकार से जल्दी मचा रहे थे।

मैं ठहरा वर अपितु विवाह के विषय में मेरी राय से अवगत होना नितान्त व्यर्थ समझा गया। अपनी कर्तव्यपरायणता में मैंने भी किसी प्रकार की न्यूनता नहीं आने दी, यानी एफ.ए. पास करके छात्रवृति का अधिकारी बन बैठा। परिणाम यह निकला कि मेरे सम्बन्ध में श्री प्रजापति के दोनों ही पक्ष, कन्या पक्ष और वर पक्ष बार–बार बेचैन होने लगे।

हमारी जन्म-भूमि में जो पुरुष एक बार विवाह कर लेता है, उसके मन में दूसरी बार विवाह करके रचनात्मक कार्यों में कोई जिज्ञासा या उद्वेग नहीं होता एक बार नर–मांस का स्वाद लेने पर उसके प्रति बाघ की जो मन की दशा होती है, नारी के विषय में बहुत कुछ वैसी ही हालत एक बार विवाह कर लेने वाले पुरुष के मन की भी होती है।

एक बार नारी का अभाव घटित हुआ, कि फिर सबसे पहला प्रयत्न उस अभाव को पूर्ण करने के लिए किया जाता है। ऐसा करते हुए इस बार उसका मन दुविधा में नहीं रहता, कि भावी पत्नी की आयु क्या है और कैसी है उसकी अवस्था?

मैं देखाता हूँ कि सारी दुविधा और दुश्चिंता का ठेका आजकल के लड़कों के ही नाम झूटा है। लड़कों की ओर से बारम्बार विवाह का प्रस्ताव होने पर उनके पिता पक्ष के चांदी के समान श्वेत केश खिजाव की महिमा से बारम्बार श्याम–वर्ण को अपना लेते हैं और उधर बातचीत की तत्तामि से ही लड़कों के श्याम केश, मेरा चिन्ता, परेशानी के रात के कुछ घंटों में ही उठने का उपक्रम करते हैं।

आप विश्वास कीजिए, मेरे मन में ऐसा कोई विषय या उद्वेग का श्रीगणेश नहीं हुआ; अपितु विवाह के प्रस्ताव से मन मयूर बन्सत की दक्षिण पवन की शीतलता में नृत्य कर उठा। कौतुहल से उलझी हुई कल्पना की नई आई हुई कॉमलों के बीच मानो गुप्तचुप कानाफूसी होने लगी। जिस विद्यार्थी को एडमण्डवर्क की फ्रांसीसी क्रान्ति की घोर टीकाओं के पांच–सात पोथे जवानी घोटने हों, उसके मन में इस जाति के भावों का उठना निश्चक ही समझा जाएगा। यदि टेक्सट बुक कमेटी के द्वारा मेरे इस लेख के पास होने की लेशमात्र भी शंका होती, तो सम्भवतः ऐसा कहने से पूर्व ही सचेत हो जाता।

परन्तु मैं यह क्या ले बैठा? क्या यह भी ऐसी कोई घटना है? जिसे लेकर उपन्यास लिखने की योजना बना रहा हूँ। मेरी योजना इतनी शीघ्र आरम्भ हो जाएगी, इसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी। प्रबल आकांक्षा थी कि वेदना के जो कजरो मेघ रात कई वर्षों से मन में छा रहे हैं उन्हें किसी बैशाखी संंध्या की तुफानी वर्षा के वेग द्वारा बिल्कुल ही निष्प्राण कर दूंगा। पर न तो बच्चों की पाठ्य–पुस्तक ही लिखी गई, क्योंकि संस्कृत का व्याकरण मेरे मस्तिष्क से अछूता रह गया था और न काव्य ही रचा जा सका; क्योंकि मातृभाषा मेरे जीवन युग में ऐसी फली–फूली नहीं थी जिसके द्वारा मैं अपने हृदय के राज को बाहर प्रकट कर पाता। अन्तः देख रहा हूँ कि मेरे अन्तर का संन्यासी आज अपने अट्टहास से अपना ही परिहास करने के लिए बैठा है। इसके अतिरिक्त वह करे भी तो क्या? उसके अश्रु शुष्क हो जा गये हैं। जेट की कड़कड़ाती धूप वस्तुतः जेट का अश्रु शून्य कन्दन ही तो है।

जिसका साथ विवाह हुआ था, उसका वास्तविक नाम नहीं बताऊंगा, क्योंकि आज ब्रह्मांड के पुनर्जन्म–वेताओं में उसके ऐतिहासिक नाम के विषय में विशेष विवाद होने की शंका नहीं है। जिस नाम–पत्र पर उसका नाम अंकित है, वह मेरा ही हृदय है। वह पट और पत्नी का नाम किसी युग में भी विलुप्त होगा, यह सोचना मेरी कल्पना से बाहर है। परन्तु जिस सुनहरी दुनिया में वह अक्षय बना रहा, वहां इतिहास के विद्वानों का आना–जाना नहीं होता है। इस पर भी मेरे इस लेख में उसका कुछ–न–कुछ नाम तो चाहिए ही, अच्छा तो समझ लीजिए शबनम उसका नाम था, क्योंकि शबनम में मुस्कान और रदन दोनों घुल–मिलकर एकाकार हो जाती है और भोर का संदेश प्रभाव बेला तक आते ही चुक जाता है।

शबनम मुझे केवल दो ही वर्ष छोटी थी। मेरे पिता गौरी दान से ब्रह्मचर्य हों, सो यह बात नहीं थी। उनके पिताजी कट्टर समाज–विद्रोही थे? देश में प्रचलित किसी भी धर्म के प्रति उनमें श्रध्दा न थी। उन्होंने खूब कसकर बांग्ला भाषा का अध्ययन किया था। मेरे पिता उस भाव से समाज के अनुयायी थे। जिसे अंगीकार करते हुए किंचित–मात्र भी अड़चन हो, ऐसी किसी भी वस्तु की हमारे समाज की विशाल ड्योड़ीया अन्तःपुनः या फिछली तरा पर झलक देख पाना सम्भव न था। इसका भी कारण यही कि उन्होंने भी कसकर बांग्ला भाषा का अध्ययन किया था। पितृमह और पिताजी के विभिन्न रूप क्रान्ति की दो विभिन्न मूर्तियाँ थीं। कोई भी सरल स्वभाव का नहीं। फिर भी बड़ी आयु वाली कन्या के साथ मेरा विवाह करना पिता ने इसलिए स्वीकार कर लिया कि उसकी इस बड़ी–सी आयु की दोनों मुट्ठियों में देहेज की रकम भी बहुत बड़ी थी। शबनम मेरे श्वसुर की एकमात्र कन्या थी। पिताजी को पूर्ण विश्वास था कि कन्या के पिता का सारा धन भावी दामाद भविष्य के उदर की परिपूर्णी करने वाली है। मेरे श्वसुर को किसी मन–मत्तानर का झमेला नहीं था? पश्चिम की किसी पहाड़ी रियासत के नरेश के यहां किसी उच्च पद पर थे? शबनम जब गोद में ही थी, तभी उसकी मां के प्यार का आर्त्तल उस पर से उठ गया था। इस बात की ओर उसके पिता का ध्यान भी नहीं गया कि पुत्री प्रति वर्ष एक–एक वर्ष करके बड़ी होती जा रही है। वह उनके समाज का कोई ऐसा ठेकेदार नहीं था, जो उनके नेत्रों में अंगुली डालकर इस सच्चाई की उनके हृदय में बिठा देता।

शबनम ने यथा समय उम्र के 16 वर्ष पार किए; किन्तु वे स्वाभाविक 16 वर्ष के थे, सामाजिक नहीं। किसी ने उसे यौवन के प्रति सचेत होने का परामर्श नहीं दिया और न ही उसने स्वयं उस ओर देखा? मैंने उनीसवें वर्ष में कॉलिज के तृतीय वर्ष में पपा रखा। ठीक तभी मेरा विवाह हो गया। समाज या समाज के ठेकेदार के मत से वह आयु विवाह के उपयुक्त है या नहीं, इस विषय में दोनों पक्ष लड़–भिड़कर चाहे खून खराबा कर बैठे; किन्तु मैं तो निवेदन के साथ यही कहना चाहता हूँ कि परीक्षा पास करने के हेतु यह आयु जिस प्रकार ठीक है, विवाह करने के लिए भी उससे किसी प्रकार कम नहीं। विवाह का सूत्रपात एक चित्र के द्वारा हुआ था। उस दिन मैं पढ़ाई–लिखाई में सिर गढ़ाये बैठा था कि मेरे साथ परिहास का सम्बन्ध रखने वाली किसी आत्मीया ने मेरे सममुख टेदलु पर शबनम का चित्र लाकर रख दिया और कुछ पल शान्ति के साथ बिताकर कहा, लो, अब झूट–मूठ की पढ़ाई को बन्द करके सचमुच की पढ़ाई करो। एकदम जो तोड्कर भ्रमशून्य में लगाने वाली पढ़ाई। चित्र किसी अनाड़ी चित्रकार द्वारा खींचा गया था। कन्या के मां नहीं थी, अन्तः सन दीर्घ श्याम केशों को बांध–संवार कर जुड़े में जरी गूँथकर कलकत्ते की प्रसिध्द

राट्ट भक्ति की अलख उमगाता दैनिक



रवीन्द्रनाथ ठाकुर

शाह या मालिक कम्पनी की भद्दी, तंग जैकेट पहनाकर दूसरे पक्ष के नेत्रों में भूल झोंकने का बरबस प्रयत्न नहीं किया गया था। केवल एक सरल भरा हुआ चेहरा था, मृगी–सी दो आंखें ओर सीधी–सादी एक साड़ी। तब भी पता नहीं क्यों कोई अपूर्व महिमा, सौन्दर्य उसे घेरे हुए था। किसी भी एक चौकोर चौकी पर वह बैठी हुई थी। पीछे आवरण के स्थान पर एक धारीदार शतरंजी झूल रही थी। पास में तनिक–सी ऊंची तिपाई पर ही फूलदानो में फूलों के सुन्दर गुलदस्ते दीख रहे थे। ईरानी कालीन पर साड़ी की तिरछी किनार के किंचित अनावब्ध दो कोमल खाली पैर। चित्र की उस रूप–सुधा को जैसे ही मेरे मन के जादू का स्पर्श मिला कि वह मेरे अन्तरतम में जाग उठी। वे दोनों कजरारी आँखें मेरे सारे चिन्तन को चौंकर मुन्न पर जाने कैसे अनोखे भाव से आकर स्थिर हो गईं और उस तिरछी किनार के निम्न भाग के दोनों अनातृप्त पाों ने मेरे अन्तर परयांसन पर बरबस अपना घर बना लिया।

पत्रे की तिथियाँ आई–गई हो गईं। विवाह के दो–तीन लग्न भी बीत गये; किन्तु मेरे श्वसुर को छुट्टी मिलने का नाम भी नहीं। इधर कुछ मास से मेरे देखते–देखते एक अकाल मेरी इतनी बड़ी अविवाहित उम्र को फिजूल ही उनीसवें वर्ष की ओर धकेलने का प्रयास कर रहा था। श्वसुर और उनके अधिकारियों पर मुझे खीझ होने लगी। विवाह का दिन ठीक अकाल की पूर्व लग्न पर ही आकर पड़ा। उस दिन की शहराई की हर तान आज मुझे स्मरण हो रही है। उस दिन के प्रति मुहूर्त को मैंने चेतनता के साथ स्पर्श किया था। मेरी यह उनीस वर्ष की आयु मेरे जीवन में संदेव था, मैं उसे कसपि नहीं भुला सकूँगा।

विवाह–मंडप में चहुँओर कोलाहाल–सा फैला हुआ था। उसी के बीच कन्या का कोमल हाथ मैंने अपने हाथों में पाया। मुझे स्पष्ट तरीके से याद है कि यही मेरे जीवन की एक परम आश्चर्यजनक घटना है। मेरे मन ने बारम्बार यही कहा– इसे मैंने पाया है, हासिल किया है; किन्तु किसे? यह तो दुर्लभ है। यह नारी है, इसके रहस्य का क्या कभी ओर–छोर पाया जा सकता है?

मेरे श्वसुर का नाम गौरीशंकर था। जिस हिमाचल पर वे उच्च पदाधिकारी थे, उसी हिमाचल के मानो मोती थे। उनके गम्भीरता के शिखर पर श्वेत में कोई शशान स्वच्छ हंसी उज्ज्वल होकर छाई हुई थी। उनके हृदय के स्नेह–स्रोत का संघर्षा जिसने भी एक बार लिया, उसने फिर कभी उनसे सम्बन्ध–विच्छेद करने की चेष्टा नहीं की। काम पर लौटने से पूर्व उन्होंने मुझे बुलाकर कहा– बेटा, अपनी बच्ची को 17 वर्ष से जानता हूँ और तुम्हें अभी कुछ दिनों से, इस पर भी सौंपा तुम्हारे ही हाथों में है। जो निधि आज तुम्हें मिली है, उसे जिन उसका मूल्य भी परख सको, इससे बढ़कर आशीर्वाद मेरे पास नहीं। मेरे माता–पिता ने उन्हें बारम्बार आशा भरे शब्दों में कहा– समधीजी! कुछ चिन्ता न करना। तुम्हारी पुत्री जैसे पिता को छोड़कर आई है। वैसे ही यहां माता–पिता दोनों पाये ऐसा ही समझिये।

शबनम से विदा होते समय वे हंसकर बोलें– बिटिया चल दिया। इस बूढ़े पिता को छोड़ तेरा कौन अपना रहा है? आज से यदि इसका कुछ भी गुम हो जाये, तो इसके लिए मुझे जिम्मेवार न रहना। शबनम ने उत्तर दिया– क्यों नहीं, यदि कभी इतनी सी–चीज भी गुम हो गईं तो आपको सारी हाथ भरनी पड़ेगी।

अन्त में घर रहते हुए जिन विषयों पर बहुधा हो झंझट खड़े हो जाते थे, उनसे उसने पिता को बार–बार सचेत कर दिया। भोजन के विषय में अनिमत का उन्हें खासा अग्र्यास था। कुछ विशेष प्रकार के अपथ्य भोजन पर उनकी विशेष रुचि थी। पिता को उन सारे प्रलोभनों से यथासम्भव दूर रखाया बेटी का विशेष कर्तव्य था। इसी से वह पिता का हाथ पकड़कर बोली– बाबूजी! क्या मेरी एक बात रखेंगे? पिता ने प्रफुल्लित मन से कहा– मानव इसलिए वचन देता है, कि एक दिन उसे भंग कर चैन की सांस ले सके। इससे वचन न देना ही श्रेयस्कर है।

फिर वह कुछ न बोली और पिता के चले जाने पर उसने कमरे के द्वार बन्द कर लिये इसके बाद की घटना का बखान अन्तर्यामी ही कर सकते हैं। पिता–पुत्री की अश्रुहीन विदाई का दृश्य पार्श्व के कक्ष की चिर–कौतूहली अंतःपुरिकाओं ने देखा, सुना और आलोचना की– कैसी अजीब बात है भला? रूखी–सूखी जमीन पर रहते–रहते इन लोगों का हृदय भी सूखकर काट हो गया है। माया–ममता का चिन्ह लेशमात्र भी नहीं रहा। राम! राम! राम!

मेरे श्वसुर के मित्र बनमाली बाबू ने ही हमारी बातचीत पकड़ी की थी। वे हम लोगों के परिवार से भलीभांति परिचित थे। वे मेरे श्वसुर से बोले– बेटी को छोड़कर तो तुम्हारा दुनिया में कोई नहीं है। यहीं इनके पास ही कोई मकान लेकर जिनदगी के शेष दिन काट डालो। उत्तर मिला– जब दान दिया है, तो निशेष करके ही दे डाला है। फिर लौट–लौटकर निहाने से उसकी पीड़ा बढ़ेगी। जिस अधिकार को एक बार त्याग चुका, उसे बार–बार बनाये रखने के प्रयत्न से बढ़कर विडम्बना और क्या होगी?

अन्त में मुझे एकान्त में ले जाकर किसी अपराधी की तरह सक्चाते हुए बोले– बिटिया को पुस्तकें पढ़ने का बड़ा चाव है और लोगों को खिलाना–पिलाना उसे बहुत अच्छ लगता है। यदि बीच–बीच में तुम्हें रुपये–पैसे भेज दिया करूँ, इससे वे नाराज तो नहीं होंगे?

सुनकर मुझे तनिक आश्चर्य हुआ। कारण जीवन में कभी किसी भी ओर से धनराशि मिलने पर पिताजी नाराज हुए हों, उनका ऐसा बिगाड़ मिजाज तो मैंने कभी नहीं देखा? जो हो, मेरे श्वसुर मानो मुझे घूस दे रहे हों कुछ ऐसे ही भाव से मेरे हाथों में सौ रुपये का एक नोट थमा कर, वे वहां से चटपट चल दिए। मैंने देखा, इस बार जेब से रुमाल निकलाने की बारी आ ही गई। स्तब्ध होकर मैं

राट्ट भक्ति की अलख उमगाता दैनिक



राट्ट एक बगीचा है और हम सब इसके माली

विचारों में खो गया। मैंने अनुभव किया कि ये लोग बिल्कुल ही अन्य जाति के मानव हैं। अपने सहपाठियों में कितनों ही को तो विवाह करते हुए देखा है। विवाह मंत्रों के उच्चारण के साथ–ही–साथ स्त्री को एकबारागी कंठ के निम्न भागों में उतार लेते हैं। हजम करने के यंत्र तक पहुंचने पर थोड़ी देर के बाद वह पदार्थ अपने गुणों एवं अवगुणों का हल कर सकता है और इसके फलस्वरूप हृदय के भीतर चिन्ता बनकर हचचल भी आरम्भ हो सकती है। सो होती रहे; परन्तु निगलने के रास्ते में इससे कोई रूकावट नहीं पड़ती।

किन्तु मैंने विवाह–मंडप में ही समझ लिया था कि पाणिग्रहण के मंत्र द्वारा जिसे प्राप्त किया जाता है, उससे घर–गृहस्थी तो भली–भांति चल जाती है; परन्तु उसके हृदय को पूर्णरूपेण पाना पन्द्रह आना बाकी रह जाता है। मुझे सन्देह है कि विश्व के अधिकांश पुरुष पत्नी को ठीक–ठाक पाते हैं या उनको समझते हैं। वे स्त्री को ब्याह कर ले आते हैं, किन्तु उपलब्ध नहीं कर पाते और न कभी उन्हें इस बात का एहसास हो पाता है कि उन्होंने पाया कुछ भी नहीं। उनकी पत्नियां भी मृत्यु काल तक इस कटु सत्य से अवगत नहीं हो पातीं। लेकिन मैंने ऐसा अनुभव किया कि वह मेरी साधना की निधि है। वह अचल संपति नहीं, सम्पदा है, अगाध खराश है।

शबनम, नहीं इस नाम से काम नहीं चलेगा। एक तो यह कि वह उसका वास्तविक नाम नहीं और न यह उसका यथार्थ परिचय है। वह तो दिवाकर की तस रसिम है, क्षयकालीन उषा की विदा बेला के अश्रुओं का बिन्दु नहीं। मन को गोपनीय रखकर ही आखिर क्या होगा? उसका वास्तविक नाम था...हेमन्ती।

मैंने देखा, सत्रह वर्ष की इस सुन्दरी पर यौवन का पूरा आलोक चिराया हुआ है। तब भी इस अवस्था की गोद में भी उसे बेचिन्ता नहीं मिली है। हिमाच्छादित शिखर पर भोर का उजाला तो झलक उठा है; किन्तु हिम अभी तक गल नहीं पाया है। कैसी निष्कलंक शुभ्र है वह, कैसी पवित्र की प्रतिमा, यह मैं ही जानता हूँ, मेरे मन में बराबर वह शंका बनी रहती थी इतनी पढ़ी शिक्षित लड़की का मन पता नहीं, क्योंकि पा सक्ती? किन्तु कुछ ही दिवसों के उपरान्त मैंने जान लिया कि उसके मन की राह और शिक्षा की राह आपस में कहीं कटी ही नहीं है। कब उसके सरल–सुघ्न मन पर हल्की–सी रंगीनी छा गई नेत्र असत्य तन्द्ना में झूम उठे और देहमन मानो उत्सुक हो उठे, सो शिन्नतन्ता के साथ कह देना मेरे लिए कठिन ही नहीं, अपितु असम्भव है।

यह तो हुई एक पक्ष की बात; लेकिन अब दूसरा पक्ष भी है। वह और उत्तरे विषय में पूर्णरूप से कहने का समय अब आ पहुंचा है?

मेरे श्वसुर राज दरबार में उच्च पदाधिकारी थे। इसलिए उनकी कितनी धनराशि बैंक के खातों में है, इस सम्बन्ध में जनश्रुति ने बहुत तरह के अनुमान बिठाये थे। इनमें से किसी भी अनुमान की संख्या लाख के आंकड़ों से नीचे नहीं पड़ती थी। फलस्वरूप एक ओर पिता के प्रति सम्मान बढ़ता गया, तो दूसरी ओर इकलौती बेटी की ओर स्नेह। हमारी घर–गृहस्थी का काम–धंधा और तौर–तरीका जानने के लिए हेम खूब उत्सुकता दिखला रही थी। किन्तु मां ने उसे अगाध स्नेह दिखाने के अभिप्राय से किसी काम में हाथ नहीं लगाने दिया? यहां तक कि मायके से हेम के साथ जो पहाड़नि मेहरी आई थी, उसे उन्होंने वास्तव में अपने पक्ष में नहीं घुसने दिया, फिर भी उसकी जाति–पाति के बारे में किसी प्रकार का अपवाद नहीं किया? वे डत्ती थीं कि विशेष छान–बीन करने पर कहीं कोई अरुचिकर सत्य न सुनना पड़े।

दिन इसी तरह कट जाते; लेकिन एक दिन पिताजी का मुंह थोर गंभीर दिखाई दिया। बात यह थी कि मेरे श्वसुर ने मेरे विवाह में 15 सहस्र रुपये नकद और पांच सहस्र के आभूषण दिए थे। इधर पिताजी को किसी कृपापात्र दलाल से पता चला कि यह धनराशि कर्ज लेकर जुटायी गई थी; जिसका ब्याज भी कुछ मामूली न था और लाख रुपये की अफवाह तो बिल्कुल उड़ाई हुई थी।

वास्तव में मेरे विवाह के पूर्व श्वसुर की संपत्ति के परिणाम के विषय में पिताजी ने भी उनकी कोई आलोचना नहीं की थी। तब भी न जाने किसी तर्क–पध्दति से आज उन्होंने यह बिल्कुल पक्का निश्चय कर लिया था कि उनके समधी ने आज–बूझकर यह धोखा उनके साथ किया है। इसके अलावा पिताजी की यह धरणा थी कि मेरे श्वसुर राजा के मुख्यमंत्री या उसी समान किसी उच्च पद के अधिकारी हैं। पीछे पता चला कि वे वहां के शिक्षा विभाग के अध्यक्ष हैं। पिताजी ने टीका की– अर्थात् अविद्या के मुखाध्यासपक, विश्व में जितने भी भद्र पद हैं, उनमें सबसे ऊंचा है। पिताजी ने बड़ी–बड़ी आशाएं कर रखी थीं कि आज नहीं तो कल, श्वसुर के अवकाश प्राप्त करने पर राज मंत्री के पद पर वे स्वयं ही प्रतिष्ठित होंगे।

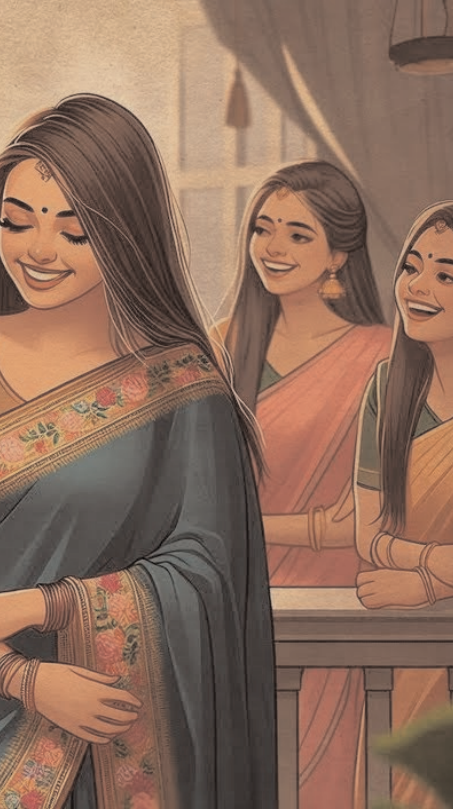
इन्हीं दिनों के कार्तिक मास में रामलौला के उपलक्ष्य में हमारा जन्मभूमि का सारा परिवार कलकत्ते वाली हवेली में आ जुटा है। वधू को देखते ही उनमें एक छोरे से दूसरे छोरे तक कानाफूसी की लहर दौड़ गई। क्रमशः अस्फुट हुई। दूर के नाते से सम्बन्धित नानी ने कहा– आग लगे मेरे भाग्य को, नई बहू ने तो उम्र में मुझे भी हरा दिया।

सुनकर नानी की समवयस्कता बोल उठी–अर्र हमें न हरायेगी, तो हमारा बच्चा विदेश से बहू लाने ही क्यों जाएगा?

मां ने उग्रता के साथ उत्तर दिया– भैया रे! यह क्या बात हो रही है? बहू ने अभी ग्यारह पार नहीं किए, यही अगले फाल्गुन में बारह में पांव धरेगी। पछहुआ देस में दाल–भात खा–खाकर बड़ी हुई है बेचारी, सो देह तनिक अधिक सम्भल गई है।

वृध्दाओं ने शान्त अविश्वास के साथ उत्तर दिया– सो बिटिया रानी, इतनी कमजोर तो हमारी निगाह अभी नहीं हुई है। हमारे ख्याल में तो लड़की वालों ने जकर उमर कुछ

राट्ट भक्ति की अलख उमगाता दैनिक



राट्ट एक बगीचा है और हम सब इसके माली

दबाकर बताई है। मां ने कहा– हम लोगों ने तो जन्म–पत्री देखी है। बात सच है, किन्तु जन्म–पत्री से ही तो प्रमाणित होता है कि बहू की उम्र सत्रह है।

वृध्दाओं ने कहा– सो जन्म–पत्री में क्या धोखा–धड़ी नहीं चलती? इस बात पर थोर वाद–विवाद छिड़ गया। यहां तक कि संघर्ष की नौबत आ गई। उसी क्षण वहां हेम आ पहुंची। उन दोनों वृध्दाओं में से एक ने उसी से पूछा– बहू रानी! तुम्हारी उमर क्या है, बताओ तो भला? मां ने आंखों से संकेत किया; परन्तु हेम उनका मतलब नहीं समझी, बोली– सत्रह। मां तिलमिला उठी। उसने उसी अवस्था में कहा– तुम्हें मालूम नहीं है। हेम विरोध का प्रदर्शन करती हुई बोली– मुझे ठीक मालूम है। मेरी उम्र सत्रह है।

वृध्दाओं ने गुप्तचुप एक–दूसरे के हाथ दबाये। बहू की मूर्खता पर खीझ कर मां बोली– तुम्हें तो सब मालूम है। लेकिन तुम्हारे बाबूजी ने हम से खुद कहा है कि तुम्हारी उमर ग्यारह है।

सुनकर हेम चौंक उठी, बोली– बाबूजी ने! कभी नहीं। मां ने कहा– तुमने तो चकित कर दिया है। समधीजी स्वयं मेरे सामने कह गये थे और बिटिया कहती है, कभी नहीं। यह कहकर मां ने आंख से फिर संकेत किया। अब की बार हेम संकेत समझ गई; लेकिन उसने कंठ की और भी मजबूत करके कहा, बाबूजी। ऐसी बात कभी नहीं कह सकते।

मां ने स्वर की धीमा करके कहा– तू क्या मुझे झूठ उहराना चाहती है? हेम ने फिर वही दुहराया– बाबूजी कभी झूठ नहीं बोलते।

इसके बाद मां जितना भी अपवाद फैलाने लगी, उतनी ही कालिमा फैलकर सबको एकाकार लीपने–पोतने लगी। इतना ही नहीं, मां ने नाराज होकर पिताजी के सम्मुख अपनी बहू की मूढ़ता और जिदीपन की शिकायत रखी। पिताजी ने उसी क्षण हेम को बुलाकर धमकाते हुए कहा, इतनी बड़ी अविवाहित कन्या की अवस्था सत्रह वर्ष की थी, वह कन्या के लिए कोई बड़प्पन की बात है, जो उसका डिब्बोरा पीटती फिरोगी? हमारे घर में यह सब नहीं चलेगा, कहें देना हूं।

हाय र भाग्य, बहु रानी के प्रति पिताजी का यह मधु मिश्रित संस्तर पंख इस प्रकार उस्ताद बाज्रखां के घोर पडज तक कैसे उतर आया?

हेम ने व्यर्थित होकर पूछा– यदि कोई उम्र जानना चाहे तो क्या उरदें?

पिताजी बोले– झूठ बोलने की आवश्यकता नहीं। कह दिया करो, मुझे नहीं पता, मेरी सास, मां जानती हैं। इसके बाद झूठ किस तरह बताया जाता है, इसका सारा उपदेश सुनने के बाद, हेम कुछ इस तरह चुप हो गई कि पिता जी को यह समझना बाकी न रहा कि उसका सारा सदुपदेश बिल्कुल चिकने घड़े पर पानी की तरह पड़ा।

हेम की दुर्रति पर दुःख क्या प्रकट करूँ, उसके समक्ष तो मेरा मस्तक ही नत हो गया। मैंने देखा शारदीया प्रभात के आकाश की तरह उत्पले नेत्रों की वह सरल उदार दृष्टि मानो किसी संशय की छाया से म्तान हो उठी? भीत मृगी की तरह मानो उसने मेरे मुख की ओर देखा और सोचा, मैं कदाचित इन्हें नहीं पहचानता।

उस दिन मैं एक सुन्दर जिल्द वाली अंग्रेजी कविताओं की एक पुस्तक क्रय करके उसके लिए ले आया था। उसने पुस्तक को अपने सुन्दर हाथों से थामा, फिर धीमे–से गोद में रखकर एक बार भी खोकर नहीं देखा। मैंने उसके दायें हाथ को अपने हाथों में लेकर कहा– हेम, मुझ पर नाराज न होना, मैं तो तुम्हारे सत्य के बन्धन में बंधा हुआ हूँ।

सुनकर वह कुछ न बोली, केवल तनिक मुस्करा दी। सृष्टिकर्ता ने वैसी ही मुस्कान जिसे दी है उसे और भी कुछ कहने की आवश्यकता ही कहां?

इधर पिताजी की आर्थिक तरक्की के कुछ दिनों बाद से सृष्टिकर्ता के उस अनुरूप का चिर–स्थायी कर रखने के स्वार्थ से हमारे यहां नये उत्साह से पूजा–पाठ चल रहा था। आज तक कभी भी पूजा–अर्चना में बहू की कभी भी बुलाहट नहीं हुई। अचानक नई वधू को पूजा का थाल सजाकर का आदेश मिला। वह बोली– मां! मुझे समझा दो, कैसे क्या करना होगा?

प्रश्न कुछ ऐसा था, जिसे सुनकर किसी के सिर पर आसमान टूट पड़ला, यह तो सब लोग भली प्रक्राज जानते थे कि मातुहीना हेम प्रवास में ही इतनी बड़ी हुई है। तब भी इस उद्देश्य का आशय तो केवल हेम को लज्जित करना ही था। सो सभी ने अपने गाल पर हथेली रखकर कहा– हाय मैया, यह भला कैसी बात है? आखिर किस नास्तिक के घर की बेटी है? बहू घर की लक्ष्मी अब इस गृहस्थी से विदा होने ही वाली है? देरी मत समझना और इसी प्रसंग में हेम के पिता को लक्ष्य करके न जाने कितनी अकथनीय बातें की गईं?

कटु आलोचना की हवा जब से चलनी आरम्भ हुई थी, तब से हेम आज तक बराबर चुप रहकर सब सहन करती आ रही थी। कभी पल भर के लिए भी उसने किसी के सामने अश्रु न बहाये? परन्तु आज तो उसकी बड़ी–बड़ी आंखों को प्लावित करती हुई अश्रुओं की झड़ी लग गई। वह खड़ी होकर बोल उठी– आपको मालूम है, वहां मेरे बाबूजी को सब लोग ऋषि कहते हैं।

ऋषि मानते हैं, सुनकर उपस्थित लोगों ने पेट भरकर दिल के गुबार निकाले। इस घटना के उपरान्त घर कभी उसके पिता का उल्लेख करना होता, तो सब लोग यही कहते, तुम्हारे ऋषि बाबूजी। इस बहू का सबसे मर्म का स्थान कौन–सा है? इसे हमारे यहां सबने अच्छी प्रकार समझ लिया था। वास्तव में मेरे श्वसुर ब्राह्मण थे और न ईसाई, और बहुत करके नास्तिक भी नहीं, पूजा–अर्चना की बात कभी उनके ध्यान में ही नहीं। बेटी को उन्होंने शिक्षित बनाने का प्रयत्न अवश्य किया था। कितने ही उपदेश भी

दिये थे; किन्तु सृष्टिकर्ता के सम्बन्ध में कोई उपदेश नहीं दिया? इसी बारे में पूछने पर उन्होंने इतना ही कहा– जिस विषय को मैं स्वयं नहीं जानता उसे सिखलाना केवल कपट ही होगा।

ससुराल में हेम की एक सचमुच की भक्ति थी, मेरी छोटी भगिनी नारायणी, वह अपनी भाभी की बहुत स्नेह करती थी, उसके लिए उस बेचारी को काफी प्रताड़ना सहनी पड़ती थी। घर में हेम के अपमान की कहानी मुझे उसी से सुनने को मिलती थी। हेम के मुंह से कभी किसी दिन भी सुनने को नहीं मिला? लज्जा का आवरण उसके अपने लिए नहीं था, अपितु मेरे लिए ही था। बाबूजी के पास से वह जो पाती वह मुझे पढ़ने के लिए दे देती। ये पत्र छोटे होने पर भी रस से भरपूर होते थे। वह स्वयं भी उनको जब कभी पत्र लिखती तो मुझे अवश्य दिखा देती। बाबूजी के साथ उसका जो नाता था, उसमें अपने साथ मुझे भी बराबर का भागी बनाये बिना उसका दाम्पत्य पूर्ण जो नहीं हो पाता। उसके इन पत्रों में ससुराल के सम्बन्ध में किसी प्रकार की शिकायत का आभास मात्र भी नहीं? यदि होता, भावी आशंका की सम्भावना थी, कारण नारायणी से मैंने सुन लिया था कि जांच के लिए बीच में उसके पत्र गोपनीय रीति से खोल लिये जाते हैं। इन पत्रों में उसका कोई भी दोष सिध्द न होने से ऊपर वालों का मन शान्त हो, सो बात नहीं; बल्कि आशा टूटने का दुःख ही सम्भवतः उन्हें ज्यादा टीसा करता था। इसलिए उन्होंने चिट्ठकर कहना शुरू कर दिया कि आखिर इतनी जल्दी–जल्दी पत्र डालने की हर भला कौन–सी जरूरत है? मानो बाबा ही सब कुछ हैं। हम लोग क्या कोई नहीं? और इसी प्रकार की अनेक अरुचिकर बातों का तांता शुरू हो गया। मैंने क्षुब्ध होकर हेम से कहा– तुम बाबूजी को पत्र लिखती हो, वह किसी और को न देकर मुझे ही दे दिया करो, कॉलिज जाते समय राह में छोड़ दिया करूंगा।

चकित होकर हेम ने कहा– क्यों? मैंने संकोचवश कोई उत्तर नहीं दिया। किन्तु हवेली में सबने कहना आरम्भ कर दिया कि अब लड़कें के सिर चढ़ना शुरू हुआ है। बी.ए. की उपाधि अब ताक पर धारी रहेगी। आखिर उस बेचारे का भला दोष ही क्या है?

सो तो तो ही। दोष किसी का है तो वह बेचारी हेम का। उसकी उम्र सत्रह वर्ष की है; वह उसका पहला दोष है। सृष्टिकर्ता का विधान ही ऐसा है, यह भी हेम का तीसरा दोष है। इसलिए तो मेरे हृदय के अगुु–अगुु में समस्त आकाश इस तरह की बांसुरी की तान साधे हुए है।

बी.ए. की उपाधि को निर्विकार भाव से मैं चूल्हे में फूंक सकता था; किन्तु हेम के कल्याण के लिए मैंने प्रण किया कि मैं अवश्य उत्तीर्ण होऊंगा और अच्छे अंकों से। दो कारणों से मुझे अपने प्रण को पूरा कर पाने का भरोसा था। एक तो हेम के अगाध स्नेह में ऐसा आत्मग्राह्यी विस्तार था कि वह मन को संकोचों, आसक्ति में फंसाकर नहीं रहती। उस स्नेह के आस–पास कोई खूब ही स्वास्थ्यवर्धक वायु बहा करती थी। दूसरे परीक्षा की पुस्तकें कुछ ऐसी थी; जिन्हें हेम के साथ–साथ पढ़ना असम्भव न था। सो मैं कमर कसकर परीक्षा पास करने के उद्योग में जुट गया।

एक दिन रविवार की दुपहरिया में बाहर के कमरे में बैठा हुआ मैं मार्टिन की आचारशास्त्रावली पुस्तक की खास–खास पंक्तियों के मध्य के पथ को चिंरते हुए लाल पेन्सिल का हल चलाये जा रहा था कि अचानक सामने की ओर मेरी दृष्टि जा पहुंची कन्या के सामने मेरे उत्तर की ओर अन्तःपुर को जाने के लिए एक जीना था इसी बंद जीने में बाहर की तफ सौंकवेदार छिड़कियां थीं। मैंने देखा कि हेम उन्हीं में किसी एक छिड़की के पास पश्चिम की ओर निहारती हुई चुपचाप बैठी है। उस ओर मल्लिक की बगिया है जिसमें कचनार का पेड़ गुलाबी पुष्पों के भार को सम्भाले खड़ा हुआ है। इस भाषाहीन गहरी वेदना के रूप को आज तक इतने सुस्पष्ट भाव से मैंने नहीं देखा था। खास कुछ भी नहीं, अपने कमरे में से मैं किंचित पीछे की ओर दीवार के सहारे टिके उसके निर के भंगी भाव भली–भांति देख पा रहा था। मेरा अपना जीवन इस तरह ललाबल बर गया था कि किसी प्रकार की भी उन्नी शून्यता मैंने आज तक देखी ही नहीं थी। आज अकस्मात अपने बिल्कुल ही पार्श्व में मैंने किसी बहुत निराशा का घना गढ़ा देखा था। इसे तलहीन नातं को मैं क्योंकर, कैसे पूरा कर सकूँगी? मुझे तो जीवन में कुछ भी छोड़ना नहीं पड़ा। न घर, न द्वार और न आज तक किसी प्रकार का अग्र्यास ही; लेकिन हेम को तो सभी कुछ छोड़कर और दूर चल कर मेरे पास आना पड़ा। इसका परिणाम किन्ता अधिक है, सो मैंने भली–भांति सोचा भी नहीं? हमारे घर में अपमान के कांटों की सेज पर वह बैठी है। उसको हमने आपस में विभक्त कर लिया है। उस वेदना के म्यान को हम दोनों ने एक साथ ही पिपा था। इसलिए हम दोनों एक–दूसरे के निकट थे। परन्तु हिमाचल में पली हुई यह गिरि नन्दिनी सत्रह वर्ष की लम्बी अवधि तक अपने बाह्य और अन्तर्जीवन में कैसी विश्वावृत्ति युक्ति के मध्य पली थी? कैसे कठोर सत्य और उदार आलोक में उसकी छवि एवं प्रकृति इस प्रकार स्पच्छ और सबल हो चुकी है? उस सारे वैभव से आज हमें क्या नाता किस प्रकार निष्ठुरता के साथ तोड़ दिया गया है, इस बात का, आज से पूर्व मैंने कभी अनुभव ही नहीं किया था? कारण उस स्थान पर हेम के साथ मेरा आसन बराबर का न था। वह

विदेश समाचार

अगर लोगों के पास सच में बेहतरीन और खास हुनर है, तो वे अमेरिका आएँ

उपराष्ट्रपति ने एच-बी आवेदनों पर अतिरिक्त शुल्क के फैसले का किया बचाव

वांशिंगटन। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा कि अपने प्रशासन चलन मरना जैसे असाधारण विदेशी टैलेंट को आकर्षित करना चाहता है, लेकिन वह ऐसे इमिग्रेशन प्रोग्राम का इस्तेमाल नहीं होने देगा जिससे अमेरिकी कर्मचारियों की जगह विदेशी संभव कम वेतन वाले कर्मचारियों को रखा जाए। वेंस ने कहा कि अमेरिका असाधारण कोशल और कालिगत्त वलले विदेशियों का स्वागत करेगा, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि एच-1बी वीजा प्रोग्राम अपने मूल मकसद से भटक गया है। वीजा धोखाधड़ी पर पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि अगर लोगों के पास सच में बेहतरीन और ख़ास हुनर है, तो वे



अमेरिका आए। उनकी यह बात मस्क के बारे में पूछे गए एक सवाल के जवाब में आई, जिन्होंने अपना बिजनेस साम्राज्य खड़ा करने से पहले अमेरिका में पढ़ाई की थी।

और स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी में दाखिला लिया था। एक पत्रकार ने पूछा कि प्रशासन विदेशी कामगारों और शोधकर्ताओं के लिए मौके सीमित करते हुए अगले मस्क की

पचास कैसे कर सकता है। वैसे ने कहा कि विदेशी पेशेवरों पर विचार करते समययुद्धकालीन अवज्ञा अधिकांशियों को दो टेस्ट कराने चाहिए। उन्होंने कहा कि पहला टेस्ट यह था कि क्या आवेदक ऐसी जगह भेरा जा जिसे कोई अमेरिकी कामगार नहीं भर सकता। दूसरा यह था कि क्या उस व्यक्ति को असाधारण कालितय है। उन्होंने पूछा कि क्या वे सच में कोई खास हुनर, कौशल, कालितय, काम करने का अच्छा तरीका और क्षमता लेकर आ रहे हैं? वैसे ने कहा कि प्रशासन अमेरिकी इन्वेस्टेशन और आर्थिक विकास में विदेशी पेशेवरों को योगदान के खिलाफ नहीं है। उन्होंने यह भी कहा कि कई नियोक्ता आब्रजन प्रोग्राम का इस्तेमाल ऐसे कामों के लिए विदेशी पेशेवरों को भरती करने में कर रहे हैं जो अमेरिकी कर सकते हैं। वैसे ने कहा कि

दुर्भाग्य से ज्यादातर एच-1बी मामलों में हम देखते हैं कि आप किसी व्यक्ति को ले रहे हैं। मुख्य कारण है कि ज्यादातर मामलों में वे अच्छे ईंसान होते हैं और उनका इस्तेमाल किसी अमेरिकी फिलिज क्लास कामगार की जगह लेने के लिए किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जो कंपनियाँ सच में असाधारण कामगार चाहती हैं, उन्हें भर्ती करने के लिए ज्यादा पैसे देने का तैयार रहना चाहिए। वैसे ने कहा, अगर आप सच में किसी बेहतरीन, जौनियस-लेवल, सुपर-स्पेशलाइज्ड व्यक्ति को अमेरिका ला रहे हैं, तो आप उस व्यक्ति को अपनी कंपनी में लाने के लिए थोड़ा ज्यादा पैसा देने को तैयार होंगे। उन्होंने कहा कि ज्यादा लागत उन नियमोंओं को हतोत्साहित करेगी जो मुख्य रूप से वेतन कम करने के लिए विदेशी कामगारों को रचना चाहते हैं।

**मक्का समझौते के तहत
पाकिस्तान ने की सेना तैनात,
सैन्य प्रवक्ता ने कबूला**

सना। ममन के हूती विद्रोहियों और सऊदी अरब के बीच जारी संघर्ष और तेज हो गया है, जिसमें मक्का संयुक्त रक्षा समझौते के सक्रिय होने के बाद पाकिस्तान ने भी अपनी सैन्य भागीदारी की पुष्टि कर दी है। पाकिस्तान ने पहली बार आधिकारिक तौर पर स्वीकार किया है कि उसके सैनिक और एयरफोर्स के जवान सऊदी अरब में नौत हैं। इस बीच सऊदी अरब ने हतियान के बढ़ते हमलों का सामना करने के लिए सौरिया से भी सैन्य मदद मांगी है, जो इस क्षेत्रीय संघर्ष को और बढ़ा सकती है। पाकिस्तान के सैन्य प्रवक्ता लेफ्टिनेंट जनरल अहमद शरीफ चौधरी ने एक इंटरव्यू में बताया कि पाकिस्तानी सेना के जवान कई दशकों से सऊदी सेना के साथ मिलकर विभिन्न भूमिकाओं में काम कर रहे हैं। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मक्का समझौता सौरिया अचानक लिया गया फैसला नहीं है, बल्कि पाकिस्तान, सऊदी अरब और तुर्की के बीच लंबे समय से चले आ रहे कूटनीतिक, राजनीतिक और सैन्य संबंधों का परिणाम है। पाकिस्तान के मुनाविफ पिछले साल

तत्परन्तर् में हुए एक द्विपक्षीय सम्मेलनों के तहत, उसने करीब 8,000 सैनिक, एयरफोर्स का एक लड़ाकू विमान स्काइडू और एयर डिफेंस सिस्टम सऊदी अरब भेजे थे। सऊदी अधिकारियों के मुताबिक रियाद के किंग खालिद अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट और अबहा अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट पर हुए हमलों में 3 लोगों की मौत हो गई और 36 घायल हुए हैं। सऊदी के सैन्य प्रवक्ता याह्या सरी ने किंग खालिद एयरपोर्ट पर बैलिस्टिक मिसाइल हमले का दावा किया, जबकि सऊदी नेतृत्व वाले गठबंधन ने मिसाइल को रोकने और लॉन्च प्लेटफॉर्म को नष्ट करने की बात कही। इसके बाद हतियानों ने एयरलाइन कंपनियों को सऊदी एयरस्पेस में आने से बचने का चेतावनी भी दी थी। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय के मुताबिक यह सम्मेलनीता जरूरत पड़ने पर सेना को तेजी से सऊदी अरब में तैनात करने की अनुमति देता है। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने इस सम्मेलनों के तहत पाकिस्तान और तुर्की की सैन्य भूमिका का स्वागत किया है।



गाजा में एक वाहन पर इजरायली ड्रोन हमले के बाद लोग उस क्षतिग्रस्त वाहन को देखते हुए।

‘इसायास’ तूफान मेक्सिको की खाड़ी की ओर बढ़ा, हजारों लोगों पर कहर बनकर बरसेगा

वाशिंगटन। अल्ट्राकॉस्ट महासागर में इस साल का पहला चक्रवाती तूफान 'डसाया' अब विकराल रूप ले चुका है और तेजी से अमेरिका के मेक्सिको की खाड़ी की ओर बढ़ रहा है। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि यह हरीकैन रात के अंधेरे में सबसे ज्यादा शक्तिशाली हो जाएगा, जो 177 किलोमीटर प्रति घंटे की रफतार के साथ फ्लोरिडा, अलाबामा और मिसिसिपी के तटीय इलाकों में 50 हजार से ज्यादा लोगों पर कहर बरपाएगा। तूफानी हवाओं, मूसलाधार बारिश के साथ 7 फीट ऊंची समुद्री लहरें इस तूफान की ओर खतरनाक बना देंगी। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक खाड़ी का पानी इस वक उमड़ी है

कहीं ज़्यादा गर्म है, जो इस चक्रवात को लगाना उर्जा दे रहा है और इसे को दलवार-ब-दिन ज़्यादा आक्रामक बना रहा है, जिसने सितंबर से पहले हरिकेन बनने का कई सालों का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। ताज़ा रिपोर्ट के मुताबिक 'इसायास' के केंद्र में हवाओं की गति 130 किलोमीटर प्रति घंटा तक पहुँच चुकी है। जैसे-जैसे यह जमीनी इलाक़े के पास पहुँचेगा, इसकी रफ्तार 177 किलोमीटर प्रति घंटा की हो सकती है, जिससे यह 'कैटेगरी 2' का एक विनाशकारी हरिकेन बन जाएगा। रात के समय जब यह तट से टकराएगा, तो हवाओं का ये प्रचंड दबाव पेड़ों को उखाड़ देगा, बिजली की खँबे ध्वस्त कर देगा।

सामान त नावी पिछे शांति पुरर है। दक्षिण और वकीकी और अंतर देने में लिए नोबे समिति असाधारण अनुसरन पिछे के प्रमुख अंके में उनकी करियर ख नेल्सन खिलाफ लोगों का

मादुरो पर अमेरिका में नए आरोपों की तैयारी

वांशिष्टन। वेनेजुएला के पूर्व राष्ट्रपति निकोलस मादुरो और उनके पत्नी सिलविया फ्लोरेस के खिलाफ अमेरिकी में नए आपराधिक आरोप लगाए जाने की संभावना है। एक अमेरिकी अधिकारी के मुताबिक, एक आरोप वेनेजुएला में हिरासत में लिए गए अमेरिकी नागरिकों को कथित तौर पर प्रभावित करने से जुड़े होंगे। अधिकारी ने बताया कि नए आरोप गुस्काव तक लगाए जा सकते हैं। मादुरो और फ्लोरेस को अमेरिकी सेना ने 3 जनवरी को काराकास स्थित उनके घर से पकड़ा था और ड्राइव तकरी से जुड़े आरोपों में मुकदमे का सामना करने के लिए न्यूयॉर्क लाया गया था। दोनों ने खुद को निर्दोष बताया है। उनके खिलाफ मुकदमे की शुरुआत 1 जून 2027 से होने की बात कही गई है। मैहैटन के अमेरिकी अदालती कार्यालय के प्रवक्ता ने नए आरोपों को लेकर टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। मादुरो और फ्लोरेस के वकीलों की ओर से भी तत्काल कोई प्रतिक्रिया सामने नहीं आई। मादुरो के शासनकाल में अमेरिका और वेनेजुएला के संबंध तनावपूर्ण रहे। वांशिष्टन का आरोप था कि वेनेजुएला की सरकार अमेरिकी नागरिकों को हिरासत में लेकर अर्थिक प्रतिबंधों में राहत जैसे शिथिलताएँ हासिल करने की कोशिश करती थी।

भारतीय मूल की नावी पिह्लै को
2026 का नोबेल शांति पुरस्कार

वाशिष्ठान्न। नर्वैजयन् नोबे
समिति ने भारतीय मूल की नवनेत्र
नामि पिछे को 2026 के लिए नोबे
शांति पुरस्कार से सम्मानित कि
है। दक्षिण अफ्रीका की प्रतिष्ठित ज
अथ वकील रह चुकीं पिछे को शा
अथ अंतरराष्ट्रीय कानून को बढ़ा
देने में उनके असाधारण प्रयासों
लिए नोबेल शांति पुरस्कार मिला।
समिति ने उनके समर्पण
असाधारण बताया है। रिपोर्ट
अनुसार, नोबेल कमेटी ने बताया
पिछे के शुरुआती कार्यों से लेकर
प्रमुख अंतरराष्ट्रीय अदालती मामलों
में उनकी सेवाओं तक, उनका प
करियर खास संदेश देता है। उन्हें
निस्वतन्त्र मंडला सहित रंगभेद
खिलाफ आवाज उठाने वाले व
लोगों का बचाव किया था।

डीपफेक के बढ़ते खतरे को देख पीएम मेलोनी करवा रहीं अपनी आवाज का ट्रेडमार्क

रोम। पछाईं का बहुत इस्तेमाल जिनकी सहूलियतों के लिए कर रहा है, उसी चुनौतीयों भी खड़ी कर रहा है। इस अर्द्धजटिल युग में किसी को भी आवाज और पहरे की ज़रूरत नहीं है, नकल करना बहुत आसान है, जिसे डीपफेक कहा जाता है। इस युग से निपटने और अपनी सांप्रदायिक छवि को बचाने की अपनी सुरक्षा के लिए, इटली की पोप जॉर्जिया मेलोनी ने अनेका कदम उठाया है। वह अपनी आवाज का इस्तेमाल कर रहा है, जो डीपफेक और एआई के दुर्भावयोग के खिलाफ एक डीपफेक कचरा का काम करेगा। मोडिया रिपोर्ट के मुताबिक मेलोनी ने यूरोपीय संघ के टेलीकम्युनिकेशन प्रॉपर्टी ऑफिस में अपनी आवाज के टेम्पलेट्स को अपलोड करवा दिए हैं। वह आवेदन कर सेकंड की ऑडियो क्लिप पर आधारित है, जिसमें वह दो बार कहती हैं— 'मैं जियोर्जिया मेलोनी हूँ। हालांकि, वह आवेदन अभी तक स्वीकृत नहीं है और इसे आधिकारिक रूप से मंजूरी मिलना बाकी है। यह रिकॉर्ड किया गया वाक्य मेलोनी के

२०१९ के एक प्रसिद्ध राशनोक्ति भाषण की याद दिलाता हूँ, जिसमें उन्होंने कहा था कि मैं जियोर्जिया हूँ, मैं एक महिला हूँ, मैं एक माँ हूँ, मैं डेटेलिंगम हूँ, मैं ईसाई हूँ। यह राशन इटली में काफी लोकप्रिय हुआ था और इस पर एक वायरल डांस रीमिक्स भी बना था। विशेषज्ञों और मीडिया रिपोर्टरों के मुताबिक भले ही यह ट्रेडमार्क अनुमतिपत्र हो जाए, लेकिन यह अकेले एआई-जनित डीपफेक को पूरी तरह से नहीं रोक पाएगा। हालाँकि यह उन लोगों के लिए अतिरिक्त कारणीय पद्धतों जैसा रूप दे देगा जो निष्पक्ष इजाजत के उनकी आवाज की नकल करने की कोशिश करते हैं। यदि यह ट्रेडमार्क मंजूर हो जावे, तो कार्टून चरित्रों में मेलोनी इस प्रकार की आवाज सुरक्षा प्रणाली वाली दुनिया की पहली ऐसी नेता बन जाएगी। इससे पहले इस तरह के ट्रेडमार्क मुख्य तौर पर गायकों और मशहूर सेलिब्रिटी द्वारा लिए जाते रहे हैं, लेकिन नेताओं की तरफ से ऐसा पहली बार किया जा रहा है।

भारतीय मूल की नावी पिछई को मिला नोबेल शांति पुरस्कार, ट्रंप का सपना फिर टूटा

वाग्विद्वान्। भारतीय मूल की प्रख्यात न्यायविद नावी पिल्हई को वर्ष 2026 का नोबेल शांति पुरस्कार दिया गया है। इस घोषणा के साथ ही अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को नोबेल पुरस्कार जीतने का सम्मान फिर आधेरा रह गया। दक्षिण अफ्रीकी मूल की नावी पिल्हई को शांति और अंतर्राष्ट्रीय कानून को बढ़ावा देने के उनके अथक प्रयासों के प्रति प्रतिक्रिा सम्मान मिला है। इसकी जानकारी नॉर्वेजियन नोबेल समिति के जॉर्गेन वान्डे फ्राइडेनने ने दी। नोबेल समिति ने पोस्ट कर बताया कि नवनेम नावी पिल्हई ने 2008 से 2014 तक संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उन्वयुक्त के रूप में कार्य किया है। इस दौरान उन्होंने वैश्व शांति, मानवाधिकारों की रक्षा और अंतर्राष्ट्रीय कानून व न्याय के भिन्नता को मजबूत करने में अग्रणी भूमिका निभाई। उनकी इस असाधारण सेवाओं को मान्यता देकर समिति ने उन्हें यह सम्मान देने का फैसला किया है। दूसरी ओर, अफ्रीकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप, जो लंबे समय से शांति नोबेल पुरस्कार के प्रबल दावेदार होने का दावा करते रहे हैं, को फिर निराशा झेलनी है। ट्रंप ने कई मौकों पर कहा था कि उन्होंने कई देशों के बीच युद्ध रूकवावा है और दुनिया को बड़े संकटों से बचाया है।

6 बिलियन डॉलर के प्रोजेक्ट में एक साथ आएंगी टेक कंपनियां और यूनिवर्सिटीज



अमेरिका में विज्ञान और तकनीक को बढ़ावा देने ट्रंप ने किया योजनाओं का ऐलान

वाशिंगटन। अमेरिका में विज्ञान और तकनीक को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय डोनाल्ड ट्रंप ने 6 अरब डॉलर से ज्यादा की योजनाओं का ऐलान किया है। इसके तहत एआई, कांटम कंप्यूटिंग, न्यूक्लियर-पावर से संचालित परमाणु और बायोमैडिकल साइंस में प्रसव को तेज करने के लिए सरकारी एजेंसियों, टेक्नोलॉजी कंपनियों, यूनिवर्सिटीज और निर्यातकारी संस्थाओं को एक साथ लाया गया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक ट्रंप की ओर से उपभूत 1.5 ट्रिलियन डॉलर में अमेरिकी लीडशिप को मजबूत करने के लिए बड़े प्रोग्राम की

रूपकाया था का गढ़। वहाँ पर हाउस का एक फ्लैट नोट के मुताबिक इन पहलों में जेनेरेशन मिशन के लिए 11 इंडस्ट्री पार्टनर्स से 2.4 बिलियन डॉलर के कंप्यूटिंग रिसोर्स और टेक्नोलॉजी सपोर्ट शामिल हैं। इस मिशन का मकसद वैज्ञानिक खोजों को तेज करने के लिए सुपरइंडस्ट्रीज का इस्तेमाल करना है। एनवीडिया ने 1 बिलियन डॉलर, एएमडी ने 500 मिलियन डॉलर और ओपनप्राइड ने 200 मिलियन डॉलर देने का वादा किया। एशियाई और गगल ने 150-150 मिलियन डॉलर देने का वादा किया, जबकि अन्य प्रतिभागियों ने अमेज़न वेब सर्विसेज़, माइक्रोन और टेक्नोलॉजी इन्फ्रास्ट्रक्चर कंपनियों शामिल थीं। प्रशासन ने वैज्ञानिक कंप्यूटिंग इन्फ्रास्ट्रक्चर और

भारत के खिलाफ टी20 सीरीज से पहले न्यूजीलैंड के चैंपमैन, फाउल्क्स बाहर हुए



क्लार्कसन और टिकनर शामिल

ऑकलैंड। भारतीय क्रिकेट टीम के खिलाफ सीरीज से पहले ही मेजबान न्यूजीलैंड को दोहरा झटका लगा है। 22 अक्टूबर से भारत के खिलाफ शुरू होने जा रही पांच मैचों की टी-20 श्रृंखला से पहले न्यूजीलैंड क्रिकेट के दो प्रमुख खिलाड़ी अनुभवी बल्लेबाज मार्क चैपमैन और तेज गेंदबाज जैक फाउल्क्स, चोटिल होने के कारण पूरी सीरीज से ही बाहर हो गए हैं। यह न्यूजीलैंड के लिए एक बड़ा नुकसान है। गौरतब है कि बाएं हाथ के बल्लेबाज चैपमैन को पिछले महीने यूरोपीय टी-20 लीग के दौरान बाएं पांव की मांसपेशियों में खिंचाव आ गया

था और वह अब तक पूरी तरह से फिट नहीं हो पाए हैं। वहीं, युवा तेज गेंदबाज फाउल्क्स हाल ही में कैंटरबरी में एक अभ्यास सत्र के दौरान अपने दाहिने कूल्हे में चोट के कारण सीरीज से बाहर हो गये थे। इन प्रमुख खिलाड़ियों की अनुपस्थिति को देखते हुए, न्यूजीलैंड क्रिकेट ने ऑलराउंडर जोश क्लार्कसन और तेज गेंदबाज ब्लेयर टिकनर को टीम में शामिल किया है। क्लार्कसन और टिकनर दोनों ही अपनी भूमिकाओं में विशेषज्ञता रखते हैं और टीम को संतुलन प्रदान करने की उम्मीद है। न्यूजीलैंड के मुख्य कोच रॉब वाल्टर ने इस स्थिति पर अपनी चिंता व्यक्त की और कहा, मार्क और जैक के चोटिल होने से मुझे बहुत

दुख है और मैं उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। हालांकि, हमें खुशी है कि हम जोश और ब्लेयर जैसे प्रतिभाशाली खिलाड़ियों की विशेषज्ञता का लाभ उठा सकते हैं, जो इस महत्वपूर्ण श्रृंखला में खेलने के लिए बेहद उत्साहित हैं। यह पांच मैचों की टी-20 श्रृंखला 22 अक्टूबर को काइस्टचर्च में पहले मुकाबले के साथ शुरू होगी और 1 नवंबर को हैमिल्टन में आखिरी मैच के साथ समाप्त होगी। चैंपमैन ने अब तक 113 टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं और उनके बारे में उम्मीद जताई जा रही है कि वह भारत के खिलाफ आगामी वनडे श्रृंखला तक फिट होकर वापसी कर सकते हैं। हालांकि, फाउल्क्स की वापसी के लिए कोई निश्चित समयसीमा अभी तक निर्धारित नहीं की गई है, जिससे टीम प्रबंधन चिंतित है। इस महत्वपूर्ण श्रृंखला के लिए न्यूजीलैंड की संशोधित टी-20 टीम में कसान मिचेल सैंटनर के साथ फिन एलन, माइकल ब्रैस्वेल, जोश क्लार्कसन, डेवोन कॉनवे, जैकब डफी, लॉकी फर्ग्यूसन, मैट हेनरी, बेवन जैकब्स, काइल भूमिकाओं में विशेषज्ञता रखते हैं और टीम को संतुलन प्रदान करने की उम्मीद है। न्यूजीलैंड के मुख्य कोच रॉब वाल्टर ने इस स्थिति पर अपनी चिंता व्यक्त की और कहा, मार्क और जैक के चोटिल होने से मुझे बहुत

सीनियर मेन नेशनल हॉकी चैंपियनशिप आज से झांसी में शुरू होगी

झांसी। सीनियर राष्ट्रीय पुरुष हॉकी चैंपियनशिप 10 अक्टूबर से उत्तर प्रदेश के झांसी में शुरू होगी। इसमें तीन डिवीजनों में 29 टीमें उतरंगी। ये टूर्नामेंट 21 अक्टूबर तक चलेगा। इस बार 2026 सत्र में डिवीजन ए, डिवीजन बी और डिवीजन सी होंगे, जिसमें टीमों को 2025 सत्र की रैंकिंग के अनुसार रूपा किया जाएगा। यह चैंपियनशिप देश भर की टीमों को अपनी प्रतिभा दिखाने और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान के लिए मुकाबला करने का एक मंच देगी। डिवीजन ए में 12 टीमें होंगी, जिन्हें तीन-तीन टीमों के चार पूल में बांटा गया है। पूल ए में हॉकी पंजाब, हॉकी यूनित ऑफ तमिलनाडु और हॉकी बंगाल शामिल हैं, जबकि पूल बी में हॉकी मध्य प्रदेश, हॉकी महाराष्ट्र और हॉकी पुडुचेरी शामिल हैं। पूल सी में उत्तर प्रदेश हॉकी, हॉकी कर्नाटक और हॉकी चंडीगढ़ शामिल हैं, जबकि पूल डी में मणिपुर हॉकी, हॉकी हरियाणा और दिल्ली हॉकी शामिल हैं। पूल के बाद 18 अक्टूबर को क्वार्टर फाइनल होंगे, जिसमें हर पूल से टॉप दो टीमें नॉकआउट स्टेज में जाएंगी। सेमीफाइनल

19 अक्टूबर को होंगे, उसके बाद तीसरे स्थान का मैच और फाइनल 21 अक्टूबर को होगा। डिवीजन बी में दो पूर्लों में 10 टीमें मुकाबला करेंगी। पूल ए में हॉकी एसोसिएशन ऑफ ओडिशा, असम हॉकी, केरल हॉकी, हॉकी उत्तराखंड और छत्तीसगढ़ हॉकी शामिल हैं। पूल बी में हॉकी झारखंड, तेलंगाना हॉकी, गोवा हॉकी, दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव हॉकी और हॉकी अरुणाचल शामिल हैं। वहीं डिवीजन सी में सात टीमें होंगी, जिन्हें दो पूर्लों में बांटा गया है। पूल ए में हॉकी मिजोरम, हॉकी हिमाचल और हॉकी जम्मू और कश्मीर शामिल हैं, जबकि पूल बी में हॉकी आंध्र प्रदेश, हॉकी राजस्थान, बिहार और हॉकी गुजरात शामिल हैं। डिवीजन बी और डिवीजन सी के मैच 10 अक्टूबर से शुरू होंगे, जिसमें टीमें अपने कैपेन की मजबूत शुरुआत करना चाहेंगी। डिवीजन ए के मैच 14 अक्टूबर से शुरू होने वाले हैं, जिसमें कई कड़े मुकाबले होंगे क्योंकि टीमें नॉकआउट स्टेज में अपनी जगह पक्की करना चाहेंगी।



बाकू में विश्व सीनियर जुडो चैंपियनशिप में जर्मनी और ब्राजील की प्रतियोगी एक दूसरे पर प्रहार करती हुई।

व्यापार समाचार

संक्षिप्त समाचार

एचडी फायर प्रोटेक्ट का आईपीओ 13

अक्टूबर को खुलेगा

नई दिल्ली। आग से सुरक्षा उपकरण बनाने वाली अग्रणी कंपनी एचडी फायर प्रोटेक्ट प्राइमरी मार्केट में एक बार फिर उत्साह लाने वाली है। कंपनी अपना इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग (आईपीओ) लेकर आ रही है, जिसका लक्ष्य करीब 712 करोड़ रुपये जुटाना है। यह पब्लिक इश्यू 13 अक्टूबर को खुलेगा और निवेशक 15 अक्टूबर तक इसमें बोली लगा सकते। आईपीओ के लिए प्रति शेयर 258 से 271 रुपये का प्राइस बैंड तय है, जहां एक लॉट में 55 शेयर (लगभग 14,905 रुपए का निवेश) मिलेंगे। यह पूरा ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) है, यानी कंपनी को सीधा कोई फंड नहीं मिलेगा, बल्कि मौजूदा शेयरधारक हिस्सेदारी बेचेंगे। आईपीओ के बाद प्रमोटरों की हिस्सेदारी 100 फीसदी से घटकर 85 फीसदी रह जाएगी, जिससे कंपनी का मूल्यांकन लगभग 4,749 करोड़ रुपए होगा। एचडी फायर प्रोटेक्ट आग बुझाने वाले उपकरण बनाती है और भारत सहित 90 से अधिक देशों में कारोबार करती है। वित्त वर्ष 2023 में कंपनी की परिचालन आय 489 करोड़ रुपए और लाभ 117 करोड़ रुपए रहा। विश्लेषक इस आईपीओ को लेकर सकारात्मक हैं। वे कंपनी के मजबूत मुनाफे, कर्जमुक्त स्थिति और अंतरराष्ट्रीय विस्तार की संभावनाओं को इसकी ताकत मानते हैं। हालांकि, ग्राहकों व सप्लायरों पर निर्भरता, साथ ही कच्चे माल की कीमतों में उतार-चढ़ाव जैसे जोखिम भी मौजूद हैं। लंबी अवधि के लिए, कंपनी के मजबूत बुनियादी सिद्धांतों को देखते हुए विश्लेषक इस आईपीओ पर बुलिश हैं।

आकाश अंबानी ने जियो आईपीओ को भारत का सबसे बड़ा बताया, समयसीमा पर चुप्पी

मुंबई। इंडिया मोबाइल कांग्रेस के दौरान रिलायंस जियो के चेयरमैन आकाश अंबानी ने कंपनी के बहुप्रतीक्षित आर्थिक सार्वजनिक निगम (आईजेओ) को लेकर एक महत्वपूर्ण घोषणा की है। उन्होंने कहा कि यह आईपीओ देश का अब तक का सबसे बड़ा हो सकता है, जिससे शेयरधारकों के लिए मूल्य और विकास के नए अवसर खुलेंगे। अंबानी ने आईपीओ को जियो के दस साल के रोमांचक सफर की मात्रा शुरुआत बताते हुए विश्वास व्यक्त किया कि यह न केवल देश का सबसे बड़ा आईपीओ होगा, बल्कि रिलायंस समूह की शेयरधारकों को लगातार मूल्य और विकास प्रदान करने की परंपरा को भी आगे बढ़ाएगा। उन्होंने दोहराया कि कंपनी का मुख्य मिशन हर भारतीय उपभोक्ता और नागरिक के जीवन को बेहतर बनाने वाली प्रौद्योगिकियों को उपलब्ध कराना है। हालांकि, चेयरमैन ने आईपीओ की कोई निश्चित समयसीमा नहीं बताई, लेकिन इतना जरूर कहा कि कंपनी इस पर बहुत मेहनत कर रही है और सही समय आने पर इसकी घोषणा कर दी जाएगी, क्योंकि यह कोई गोपनीय आईपीओ नहीं है। उन्होंने सैंटकॉम कारोबार को जियो के हर भारतीय घर तक होम ब्रॉडबैंड पहुंचाने के बड़े लक्ष्य का अभिन्न अंग बताया। अंबानी के अनुसार, जियो की पहुंच पहले से ही भारत के 99 प्रतिशत घरों तक है, और उपग्रह सेवाएं इस कवरेज को और गति प्रदान करेंगी। अंबानी ने इस बात पर जोर दिया कि जियो का मुख्य ध्यान हमेशा प्रौद्योगिकी के बजाय उपभोक्ता को मूल्य प्रदान करने पर रहा है। उन्होंने भारतीय उपभोक्ताओं को उच्च गुणवत्ता वाली और सबसे सस्ती सेवाएं उपलब्ध कराने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। 50 करोड़ से अधिक भारतीयों को डेटा आधारित दुनिया से जोड़ने का जिज्ञ करते हुए, उन्होंने कहा कि कंपनी भविष्य में भी समावेशिता और किफायती सेवाओं के लिए प्रतिबद्ध रहेंगी, ताकि सभी भारतीयों को सर्वोत्तम गुणवत्ता वाली सेवाएं मिल सकें।

90 फीसदी रिफंड बिना अधिकारी हस्तक्षेप के, इनपुट टैक्स क्रेडिट का दायरा बढ़ा

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में जीएसटी परिषद ने कारोबारियों के लिए माल एवं सेवा कर (जीएसटी) व्यवस्था को कहीं अधिक सरल और अनुकूल बनाने की दिशा में कई ऐतिहासिक सिफारिशों को मंजूरी दे दी है। इन बड़े बदलावों से व्यवसायों के लिए नकदी प्रवाह में सुधार होगा, करदाताओं और अधिकारियों के बीच अनावश्यक संपर्क कम होगा, और जीएसटी प्रशासन प्रणाली-संचालित बनेगा। प्रमुख सुधारों में तेज रिफंड प्रक्रिया और इनपुट टैक्स क्रेडिट (आईटीसी) के दायरे का विस्तार शामिल है। सबसे महत्वपूर्ण सुधार रिफंड प्रक्रिया में

आरबीआई की नकदी खींचने की कोशिश नाकाम, बैंकों ने लौटाया पैसा!

2 लाख करोड़ की नीलामी में रिफं 79,655 करोड़ रुपये जमा

नई दिल्ली। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) को बैंकिंग प्रणाली से अतिरिक्त नकदी निकालने के अपने प्रयासों को झटका लगा। 2 लाख करोड़ रुपये की 29 दिवसीय वेरिएबल रेट रिजर्व रेपो (वीआरआरआर) नीलामी में बैंकों ने उम्मीद से काफी कम, मात्र 79,655 करोड़ रुपये जमा किए। बाजार विश्लेषकों का कहना है कि बैंक फिलहाल छोटी अवधि की इन नीलामियों में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखा रहे, क्योंकि जमा किया गया पैसा कम समय बाद ही वापस आ जाता है। इसके बजाय, बैंक अब आरबीआई द्वारा सरकारी बॉन्ड (जी-सेक)



किए गए हैं। अब पात्र दावों की 90 फीसदी हो जाएगी, जिससे प्रक्रिया में मानवीय राशि अधिकारी के हस्तक्षेप के बिना जारी हस्तक्षेप कम होगा। रिफंड दावे की

आरबीआई की नकदी खींचने की कोशिश नाकाम, बैंकों ने लौटाया पैसा!

बेचने के फैसले का इंतजार कर रहे हैं, जिससे अतिरिक्त नकदी लंबे समय के लिए सिस्टम से बाहर हो सके। बुधवार को बैंकिंग सिस्टम में 4.23 लाख करोड़ रुपये की अतिरिक्त नकदी थी। इस बीच 10 साल के सरकारी बॉन्ड की यील्ड बढ़कर 7.29 फीसदी पहुंच गई, जो दिसंबर 2023 के बाद का उच्चतम स्तर है। बाजार दिसंबर में रेपो रेट में 0.50 फीसदी बढ़ोतरी की आशंका भी जता रहा है। अतिरिक्त तरलता और वैश्विक तनाव भी बॉन्ड बाजार पर दबाव डाल रहे हैं। आरबीआई शुक्रवार को 1.5 लाख करोड़ रुपये की एक और नीलामी करेगा, लेकिन बाजार की मुख्य नजर सरकारी बॉन्ड बेचने के ऐलान पर है, जिसका लंबी अवधि की व्याज दरों पर महत्वपूर्ण असर पड़ेगा।



नेशनल मैरीटाइम सर्च एंड रेस्क्यू बोर्ड की देखरेख में ओडिशा के पारादीप तट पर 12वीं नेशनल मैरीटाइम सर्च एंड रेस्क्यू एक्सरसाइज के दौरान भारतीय तटरक्षक बल के जहाज़।

रूस के खिलाफ महिला फुटबॉल टीम ने काफी अच्छा खेला : कोच छेत्री



कोलकाता। भारतीय महिला फुटबॉल टीम के मुख्य कोच क्रिस्तिन छेत्री ने कहा है कि उनकी टीम को अंतरराष्ट्रीय मैत्री मैच में भले ही रूस से 0-4 से हार का समाना करना पड़ा है पर उनकी टीम को इससे काफी कुछ सीखने को मिला है। कोच के अनुसार टीम ने काफी अच्छा खेल दिखाया और हार नहीं मानी। मेरे लिए यह सबसे अच्छी बात है। छेत्री ने कहा कि जून से प्रतियस्धी फुटबॉल की कमी रूसी टीम के खिलाफ चुनौतीपूर्ण साबित हुई। हालांकि, उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि यह अनुभव युवा खिलाड़ियों के लिए कीमती होगा क्योंकि वे इंटरनेशनल लेवल पर आगे बढ़ रहे हैं। 11 अक्टूबर को होने वाले दूसरे फ्रेंडली मैच को देखते हुए, छेत्री ने बताया कि टीम लंबे समय तक अपनी तेजी बनाए रखने की अपनी काबिलियत को बेहतर बनाने पर काम करेगी।

यशस्वी अब विकेटकीपिंग का भी कर रहे अभ्यास

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट टीम के युवा बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल आकल बल्लेबाजी और लेग-स्पिन के अलावा विकेटकीपिंग का भी अभ्यास कर रहे हैं, जिससे सभी प्रभावित हैं। हाल ही में सोशल मीडिया पर एक तस्वीर तेजी से वायरल हुई, जिसमें यशस्वी विकेटकीपिंग का अभ्यास करते दिखे। इसके बाद से ही सभी हैरान हैं कि वह अब क्या करना चाहते हैं। वहीं मुंबई के कप्तान सिद्धेश लाड ने इस रहस्य के बारे में बताया है। लाड ने खुलासा किया कि, यशस्वी जायसवाल बल्लेबाजी और लेग-स्पिन के अतिरिक्त एक बैक-अप के तौर पर विकेटकीपिंग का अभ्यास कर रहे हैं। लाड ने इस कदम के पीछे की वजह भी स्पष्ट की। उन्होंने कहा कि यशस्वी को लगता है कि बढ़ती प्रतियस्धा के इस दौर में उन्हें अपने खेल में कुछ और कौशल जोड़ने की जरूरत है। कप्तान ने आगे कहा, मुझे उनके इरादों के बारे में पक्का नहीं पता, लेकिन अभी वह बहुत अभ्यास कर रहे हैं और मुझे भरोसा है कि अगर वह अभ्यास करते रहेंगे, तो उन्हें इसकी आदत हो जाएगी। लाड के इस बयान से साफ है कि यशस्वी क्रिकेट के हर प्रारूप में अपनी उपयोगिता बढ़ाने के लिए यह अतिरिक्त कौशल सीख रहे हैं। गौरतलबह है कि भारतीय टीम में हर जगह कड़ी प्रतियस्धा को देखते हुए, एक खिलाड़ी का बहु-कौशल वाला होना निश्चित रूप से उसकी टीम में जगह पक्की करने में सहायक हो सकता है। अभी तक यशस्वी को सीमित ओवरों के क्रिकेट में बहुत ज्यादा मौके नहीं मिल रहे हैं। उन्होंने अपना आखिरी एकदिवसीय मैच जून में अफगानिस्तान के खिलाफ खेला था, जहां विराट कोहली के रिप्लेसमेंट के तौर पर शामिल होकर उन्होंने शानदार 110 रन की शतकीय पारी खेली थी। इस प्रदर्शन ने उनकी बल्लेबाजी क्षमता को एक बार फिर साबित किया, लेकिन अब संभावना जताई जा रही है कि अपनी ऑलराउंड क्षमताओं को और निखारने के लिए यशस्वी अब विकेटकीपिंग को भी अपने हुनर में जोड़ना चाहते हैं, ताकि वह टीम के लिए एक अधिक बहुमुखी विकल्प बन सकें।

रणजी ट्रॉफी के लिए जडेजा सौराष्ट्र टीम में शामिल

राजकोट। अनुभवी ऑलराउंडर रवींद्र जडेजा रणजी ट्रॉफी 2026/27 सत्र के लिए सौराष्ट्र टीम से खेलेंगे। जडेजा को छत्तीसगढ़ के खिलाफ होने वाले के पहले मैच के लिए सौराष्ट्र की 16 सदस्यीय टीम में शामिल किया गया है। इस टीम का नेतृत्व अनुभवी तेज गेंदबाज जयदेव उनादकट करेंगे। रणजी ट्रॉफी में खेलने से जडेजा को न्यूजीलैंड के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज से पहले लय हासिल करने का अवसर मिलेगा। रणजी ट्रॉफी मुकाबले 11 अक्टूबर से शुरू हो रहे हैं। इसमें गत चैंपियन सौराष्ट्र को आंध्र, असम, छत्तीसगढ़, हैदराबाद, कर्नाटक, पंजाब और त्रिपुरा के साथ एलीट ग्रुप बी में रखा गया है। वहीं उनादकट की कप्तान में सौराष्ट्र अपने अभियान की शुरुआत राजकोट के निरंजन शाह स्टेडियम में छत्तीसगढ़ के खिलाफ करेगा। सौराष्ट्र की टीम में पिछले सत्रन की टीम के 14 खिलाड़ी शामिल हैं। उनादकट ससेक्स के लिए शानदार रहे हैं। उन्होंने सात मैचों में 22.21 की औसत से 28 विकेट लिए हैं। सौराष्ट्र 2025/26 रणजी ट्रॉफी के दौरान ग्रुप स्टेज में जल्दी बाहर हो गया था और इस साल एक मजबूत कैपेन के लिए बेताब है। चयन समिति ने दो नए खिलाड़ियों तेज गेंदबाज नील पांड्या और ऑलराउंडर अर्ध यादव—को टीम में शामिल किया है। हार्विक देसाई विकेटकीपिंग करते रहेंगे, जबकि बल्लेबाज इकाई में अनुभवी अर्पित वासवदा, चिराग जानी और जय गोहिल होंगे। उनादकट, लेफ्ट-आर्म पेसर चेतन सकारिया के साथ तेज गेंदबाजी की कप्तान संभालेंगे। अनुभवी लेफ्ट-आर्म स्पिनर धर्मेन्द्रसिंह जडेजा टीम से बाहर हो गए हैं। वह छत्तीसगढ़ की तरफ से खेलेंगे। इसका मतलब है कि इस सीजन में स्पिन बॉलिंग की जिम्मेदारी धार्थ भुट्ट पर होगी।

एफएसएसएआई का भ्रामक प्रोटीन दावों पर कड़ा रुख, दिग्गज कंपनियों को नोटिस

नई दिल्ली। भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने गलत और भ्रामक प्रोटीन दावों को लेकर बड़ी कंपनियों पर कड़ा रुख अपनाया है। डॉ. रेड्डी, नेस्ले हेल्थ साइंस, तिरुपति वेलेनेस, अमेज़न, फ्लिपकार्ट और नेटमेड्स जैसे दिग्गज कंपनियों को हाल ही में नोटिस जारी किए गए हैं। इन पर प्रोटीन बढ़ाने और मांसपेशियों को मजबूत करने संबंधी उत्पादों के लिए गलत प्रचार करने का आरोप है। एफएसएसएआई का लक्ष्य उपभोक्ताओं को गुमराह होने से बचाना और उत्पादों के बारे में सटीक जानकारी सुनिश्चित करना है। एफएसएसएआई ने इन कंपनियों से उनके उत्पादों पर किए गए प्रोटीन और मसल्स से जुड़े दावों का आधार पूछा है और यह भी सुनिश्चित करने को कहा है कि वे खाद्य सुरक्षा नियमों का पालन करें। यह कार्रवाई प्राधिकरण की कई महीनों से जारी व्यापक निगरानी अभियान का हिस्सा है, जिसमें छोटी-बड़ी कंपनियों और रेस्टोरंट्स पर लगातार निगरानी रखी जा रही है। प्राधिकरण का यह कदम ऐसे समय आया है जब वह खाने-पीने के उत्पादों पर किए जाने वाले हेल्दी, प्रोटीन से भरपूर, नो शुगर और 100 फीसदी नेचुरल जैसे अन्य भ्रामक दावों की भी सख्ती से जांच कर रहा है।

रुपया 23 पैसे बढ़कर 96.65

प्रति डॉलर पर खुला

मुंबई। रुपया शुक्रवार को शुरुआती कारोबार में 23 पैसे मजबूत होकर 96.65 प्रति डॉलर पर पहुंच गया। अमेरिकी डॉलर में मामूली नरमी और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के संभावित हस्तक्षेप से घरेलू मुद्रा को थोड़ा समर्थन मिला। विदेशी मुद्रा कारोबारियों ने बताया कि हालांकि, घरेलू मुद्रा पर व्यापक भू-राजनीतिक दबाव बना हुआ है और विदेशी पूंजी की निरंतर निकासी से दबाव और बढ़ सकता है। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 96.74 प्रति डॉलर पर खुला।

महंगाई की मार, अब खाना भी नहीं सस्ता! सब्जियों-तेल-गैस ने बढ़ाई मुश्किलें

नई दिल्ली। आम लोगों की रसोई का बजट एक बार फिर महंगाई की मार झेल रहा है। रेंटिंग एजेंसी क्रिसिल की ताजा रोटो राइस रेट रिपोर्ट के मुताबिक सितंबर माह में घर पर तैयार होने वाली शाकाहारी थाली की कीमत में सालाना आधार पर 10 फीसदी का इजाफा दर्ज किया गया है। वहीं, मांसाहारी थाली भी 6 फीसदी सहंगी हुई है। सब्जियों, खासकर प्याज, के साथ-साथ खाद्य तेल, चावल और एलपीजी की बढ़ती कीमतों ने घरेलू खर्चों में भारी वृद्धि कर दी है। रिपोर्ट बताती है कि पिछले साल सितंबर में एक शाकाहारी थाली तैयार करने में 28.1 रुपये लगते थे, जो इस साल बढ़कर 30.8 रुपये हो गए। इसी तरह, मांसाहारी थाली की कीमत 56 रुपये से बढ़कर 59.5 रुपये तक पहुंच गई है। अगर सत्ता की तुलना में सितंबर में शाकाहारी थाली 4 फीसदी और मांसाहारी थाली 3 फीसदी और महंगी हुई है, जिससे

आम परिवारों पर सीधा वित्तीय बोझ पड़ा है। रसोई के बजट पर सबसे गहरा असर प्याज की कीमतों में अप्रत्याशित वृद्धि का पड़ा है। रिपोर्ट के अनुसार, सितंबर में प्याज के दाम सालाना आधार पर 89 फीसदी बढ़कर 53 रुपये प्रति किलोग्राम हो गए, जबकि पिछले साल यह 28 रुपये प्रति किलोग्राम था। एक महीने के भीतर ही प्याज की कीमतों में 34 फीसदी की बड़ी बढ़ोतरी दर्ज की गई। रबी फसल के उत्पादन में कमी, कम बारिश और खरीफ फसल की बुआई में देरी के कारण बाजार में प्याज की आवक प्रभावित हुई है, जिससे इसकी कीमतों पर लगातार दबाव बना हुआ है। प्याज के अलावा, खाद्य तेल की कीमतों में भी सालाना आधार पर 12 फीसदी और घरेलू एलपीजी सिलिंडर के दाम 10 फीसदी बढ़े हैं, जबकि चावल की कीमतों में 8 फीसदी की तेजी आई है।

बर्खास्तगी-निलंबन के बावजूद अड़े पटवारी,नरसिंहपुर में सामूहिक इस्तीफा

भोपाल में पटवारी संघ ने मांगों को लेकर उपमुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल से की मुलाकात

भोपाल। मध्य प्रदेश में बर्खास्तगी और निलंबन की कार्रवाई के बावजूद पटवारियों का आंदोलन जारी है। शुक्रवार सुबह पटवारी संघ के प्रतिनिधिमंडल ने राजधानी भोपाल में उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल से मुलाकात कर अपनी मांगें रखीं। संघ के पदाधिकारियों के मुताबिक,उप मुख्यमंत्री ने उनकी मांगों को उचित मानते हुए सुधार के लिए मुख्य सचिव (सीएस) को नोटशीट भेजी है। इस पर चर्चा चल रही है। हालांकि, पटवारी संघ ने स्पष्ट किया है कि बर्खास्तगी और निलंबन की कार्रवाई वापस लिए जाने के बाद ही पटवारी



के बावजूद अब तक एक भी रजिस्ट्री नहीं हो सकी है। रजिस्ट्री कराने के लिए पटवारियों पर बनाए जा रहे दबाव को लेकर विरोध तेज हो गया है।

काम पर लौटेंगे। उप मुख्यमंत्री राजेंद्र शुक्ल के अध्यक्ष अधिन सैनी, मप्र पटवारी संघ के प्रांतध्यक्ष उषेंद्र सिंह बघेल सहित अन्य

नरसिंहपुर में पटवारियों द्वारा दिया गया सामूहिक इस्तीफा

भोपाल। संघ पदाधिकारियों ने डिप्टी सीएम को अपनी समस्याओं से अवगत कराते हुए बर्खास्तगी और निलंबन की कार्रवाई वापस लेने की मांग की। उन्होंने स्पष्ट किया कि मांगें पूरी होने के बाद ही पटवारी काम पर लौटेंगे। संघ का कहना है कि पटवारियों पर दबाव बनाने के बजाय उनकी समस्याओं का समाधान किया जाना चाहिए। नरसिंहपुर जिले में स्वागित्व योजना के तहत रजिस्ट्री कराने के लिए दबाव बनाने के विरोध में पटवारियों ने कलेक्टर को सशर्त सामूहिक इस्तीफा सौंपा है। इस्तीफे में कहा गया है कि पटवारियों पर अनावश्यक दबाव बनाया जा रहा है और कार्यालय समय के बाद भी काम करने के लिए बाध्य किया जा रहा है, जिससे मानसिक दबाव बढ़ रहा है। पटवारियों ने कहा कि वे अपने नियमित शासकीय दायित्वों का निर्वाहन पूरी प्रतिबद्धता से कर रहे हैं, लेकिन संघ के आह्वान के विपरीत काम करने और सेवा शर्तों की अनदेखी कर अतिरिक्त कार्य कराने का दबाव गंभीर घिटा का विषय है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि स्वागित्व योजना में रजिस्ट्री कराने के लिए अनुचित दबाव बनाया गया और निर्धारित दायित्वों से अतिरिक्त काम करने के लिए बाध्य किया गया, तो वे सामूहिक रूप से त्यागपत्र देने के लिए तैयार हैं। राज्य सरकार ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन पर 17 सितंबर को स्वागित्व योजना शुरू की थी। इसके तहत प्रदेश में आबादी भूमि पर काबिज 50 लाख हितग्राहियों को गुपुत रजिस्ट्री देने का लक्ष्य रखा गया था। योजना के लिए एक महीने की समय सीमा तय की गई थी, लेकिन समयसीमा पूरी होने में आठ दिन शेष रहने

पदाधिकारी शामिल हुए। बैठक के बाद दोनों पटवारी अपनी मांगों को लेकर एकजुट हैं और संघों के अध्यक्षों ने बयान जारी कर कहा कि पूरी मजबूती से संघर्ष जारी रखेंगे। संघ

एक करोड़ रूपए की रिश्वत के आरोप के बाद डिप्टी सीएम के ओएसडी को हटाया



शराब ठेकों में 2024-25 के दौरान कथित अनियमितताओं की जांच के निर्देश दिये

भोपाल। भोपाल। मध्य प्रदेश के डिप्टी सीएम जगदीश देवड़ा ने 1 करोड़ रूपए की रिश्त लेने के आरोपों से घिरे अपने ओएसडी दीपम रायचूरा को प्रभार से हटा दिया है। देवड़ा ने कहा कि शराब ठेकों में 2024-25 के दौरान कथित अनियमितताओं की जांच के निर्देश दिए हैं। देवड़ा के मुताबिक, दीपम रायचूरा वर्तमान में उनके ओएसडी हैं, लेकिन 2024-25 में भोपाल में सहायक आबकारी अधिकारी के पद पर पदस्थ थे। उस समय वे उनके ओएसडी नहीं थे। शराब ठेकों में गड़बड़ियों की जानकारी उन्हें समाचार पत्र के जरिए मिली। नाइट क्लब, रेस्टोरेंट और रियल एस्टेट कारोबार से जुड़े करीब 930 करोड़ रूपए

की ठगी के आरोपी मोहित गोगिया ने अपने कथित बयान में दीपम रायचूरा पर शराब ठेके के बदले 1 करोड़ रूपए लेने का आरोप लगाया है। गोगिया के बयान की कॉपी सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। गोगिया के कथित बयान के मुताबिक, शराब ठेके से जुड़े लेनदेन में 50 लाख रूपए नकद देने और 50 लाख रूपए बैंक खाते में ट्रांसफर करने का जिक्र है। उसने फर्जी बैंक एफडीआर को मंजूरी दिलाते और बिना लाइसेंस शराब की सप्लाई में मदद करने के आरोप भी लगाए हैं। गोगिया के कथित बयान के मुताबिक, तनुजा सेठी ने उसकी मुलाकात दीपम रायचूरा से कराई थी। उस समय रायचूरा आबकारी विभाग में सहायक आबकारी आयुक्त थे। दीपम ने उसे दीपक दुबे से मिलवाकर कहा कि वही उसका पूरा काम देखता है। बयान के मुताबिक, दीपम ने 2024-25 में

मानसून की विदाई के बाद मध्य प्रदेश के 9 जिलों में बारिश का अलर्ट

भोपाल और इंदौर में खिलेगी धूप, 12 अक्टूबर से साफ होगा मौसम

भोपाल। मध्य प्रदेश में मानसून की विदाई के बाद भी पूर्वी हिस्से में बारिश का दौर जारी है। शुक्रवार को रीवा और शहडोल संभाग के आसपास के 9 जिलों में बारिश का अलर्ट है, जबकि भोपाल-इंदौर समेत पश्चिमी मध्य प्रदेश में मौसम शुष्क रहने और धूप निकलने का अनुमान है। पूर्वी हिस्से में 10 और 11 अक्टूबर को भी बारिश हो सकती है, जबकि 12 अक्टूबर से पूरे प्रदेश में मौसम साफ होने की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार, चक्रवाती परिसंचरण (साइक्लोनिक सर्कुलेशन) और ट्रफ के असर से पूर्वी मध्य प्रदेश में पिछले चार दिनों से आंधी-बारिश की गतिविधियां बनी हुई हैं। इस साल मानसून सीजन में प्रदेश में सामान्य से 4 प्रतिशत कम बारिश दर्ज की गई। जून से सितंबर के बीच कुल 908.4 मिमी पानी गिरा, जबकि सामान्य बारिश का आंकड़ा 949.5 मिमी है। मौजूदा मौसम प्रणाली का असर पूर्वी मध्य प्रदेश में अभी बना रहेगा। शुक्रवार को पना, सतना, रीवा, मऊगंज, सीधी, सिंगरौली, मेहर, शहडोल और अनुपपुर में अलग-अलग 24 घंटे के दौरान बारिश होने की संभावना है। 10 और 11 अक्टूबर को भी पूर्वी हिस्से के कुछ जिलों में बारिश हो सकती है। इसके बाद मौसम प्रणाली कमजोर

पड़ने का अनुमान है। 12 अक्टूबर से प्रदेश में मौसम साफ होने और धूप निकलने की संभावना है। इस दिन प्रदेश में कहीं भी बारिश का पूर्वानुमान नहीं है। मध्य प्रदेश से दक्षिण-पश्चिम मानसू की विदाई 3 अक्टूबर को हो चुकी है। इसके बावजूद चक्रवाती परिसंचरण और ट्रफ जैसी मौसम प्रणालियों के सक्रिय रहने से कुछ इलाकों में बारिश हो रही है। वहीं मौसम में ठंडक प्रारंभ गई है,शाम होते ही शहर में सर्दी का असरस होने लगा है। पिछले 10 वर्षों के आंकड़ों में अक्टूबर के दौरान बारिश, गर्मी और ठंड तीनों तरह की स्थितियां देखने को मिली हैं। इस साल भी अक्टूबर की शुरुआत में दिन में धूप और गर्मी रही, जबकि रात के तापमान में गिरावट से ठंडक महसूस हुई। इसी दौरान पूर्वी मध्य प्रदेश के कई जिलों में बारिश भी दर्ज की गई। इस बार प्रदेश में दक्षिण-पश्चिम मानसून करीब 100 दिन सक्रिय रहा। जून से सितंबर तक चले मानसून सीजन में प्रदेश में कुल 908.4 मिमी यानी करीब 35.8 इंच बारिश हुई। सामान्य बारिश 949.5 मिमी यानी लगभग 37.3 इंच के मुकाबले यह करीब 1.5 इंच कम है। इस तरह पूरे प्रदेश में सामान्य से 4 प्रतिशत कम बारिश दर्ज की गई। क्षेत्रवार आंकड़ों के अनुसार, पूर्वी मध्य प्रदेश में सामान्य से 4 प्रतिशत ज्यादा बारिश हुई, जबकि पश्चिमी हिस्से में सामान्य से 12 प्रतिशत कम पानी गिरा।

दिल्ली में प्रदर्शन को लेकर कई ट्रेनों पर असर, हजारों यात्री परेशान

भोपाल। दिल्ली जाने की तैयारी कर रहे मध्य प्रदेश के रेल यात्रियों को परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। रेलवे ने 9 अक्टूबर को चलने वाली कई ट्रेनों को निरस्त कर दिया है, जबकि मुंबई से दिल्ली जाने वाली दो ट्रेनों को उनके निर्धारित समय से 5 घंटे की देरी से चलाने का निर्णय लिया है। यह बदलाव 10 अक्टूबर को नई दिल्ली और हजूरत निजामुद्दीन रेलवे स्टेशनों के आसपास सड़क यातायात में भारी बाधा आने की आशंका के मद्देनजर किया गया है। पश्चिम मध्य रेलवे के अनुसार,रानी कमलापतिटुड़हवार निजामुद्दीन शान-ए-भोपाल एक्सप्रेस (12155) 9 अक्टूबर को निरस्त रहेगी।

आगर में 3800 करोड़ की मैक्केन फूड परियोजना होगी शुरू : मुख्यमंत्री डॉ.यादव

मुख्यमंत्री ने आगर के बलराम कृषि महोत्सव में किसानों से किया वरुंडली संवाद

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने कहा कि सरकार समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ खड़ी है और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तत्परता से कार्य कर रही है। इसी उद्देश्य से जनविश्वास अभियान के माध्यम से सरकार घर-घर पहुंच रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में मध्यप्रदेश निरंतर प्रगति कर रहा है। प्रदेश सरकार स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रत्येक वर्ग को राहत देने तथा बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर योजनाएं संचालित कर रही है। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत



भोपाल। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि 7 अगस्त से प्रारंभ हुआ मुख्यमंत्री जनविश्वास अभियान मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव की उत्कृष्ट, संवेदनशील एवं दूरदर्शी सोच का परिणाम है। प्रत्येक शुक्रवार-ए-भोपाल एक्सप्रेस (12155) 9 अक्टूबर को निरस्त रहेगी।



शुक्रवार को मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने हरदा जिला चिकित्सालय पहुंचकर उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का जायजा लिया तथा मरीजों से चर्चा कर उनके उपचार एवं अस्पताल में मिल रही स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री ने जिला अस्पताल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान अंधत्व निवारण कार्यक्रम

पदाधिकारियों के अनुसार, प्रतिनिधिमंडल ने उप मुख्यमंत्री को पटवारियों की समस्याओं और उनके खिलाफ की गई कार्रवाई से अवगत कराया। चर्चा के बाद संबंधित विषय पर मुख्य सचिव को नोटशीट भेजी गई है। अब इस मामले में आगे होने वाले निर्णय पर पटवारियों की नजर है। पटवारी संघ ने बर्खास्तगी और निलंबन की कार्रवाई वापस लेने की मांग दोहराई है। पदाधिकारियों ने कहा कि मांगों का निराकरण होने तक उनका रुख स्पष्ट है। उन्होंने प्रदेशभर के पटवारियों से धैर्य बनाए रखने, किसी तरह की घबराहट से बचने और एकजुट होकर अपनी मांगों पर डटे रहने की अपील की है। संघ का कहना है कि वह अपनी मांगों को लेकर पीछे हटने वाला नहीं है। अब आंदोलन

भाभी जी घर पर हैं फेम सिवांगी अत्रे गरबा महोत्सव में मचाएंगी धूम

भोजपाल सनातनी सांस्कृतिक गरबा महोत्सव जम्बूरी मैदान पर 12 अक्टूबर से

भोपाल। राजधानी के जम्बूरी मैदान पर 12 से 18 अक्टूबर तक आयोजित होने वाले भोजपाल सनातनी सांस्कृतिक गरबा महोत्सव में मुंबई से बालीवुड अभिनेत्रियां और टीवी कलाकर धूम मचाने आ रही हैं। 14 अक्टूबर को टीवी अभिनेत्री भाभी जी घर पर हैं फेम सिवांगी अत्रे,16 अक्टूबर को बालीवुड अभिनेत्री हेमा शर्मा, 17 अक्टूबर को टी वी अभिनेत्री कविता कौशिक और 18 अक्टूबर को बॉलीवुड अभिनेत्री कात्या पंजाबी अपनी प्रस्तुति देने आ रही हैं। भेल जम्बूरी मैदान पर भोजपाल गरबा महोत्सव का तीसरा भव्य आयोजन होने जा रहा है। बीते दो वर्षों में हुए सांस्कृतिक गरबा महोत्सव में शहरवासियों का भरपूर सहयोग मिला है। समिति अध्यक्ष सुनील यादव ने बताया कि 1000 से ज्यादा टेनी प्रतिभागियों के साथ गरबा महोत्सव का आयोजन किया जाएगा। आयोजन को लेकर तैयारियां अंतिम चरण में हैं। शहर

में बनाए गए प्रशिक्षण केंद्रों पर 1000 से अधिक प्रतिभागी अहमदाबाद, गुजरात से आई विशेष प्रशिक्षित टीम से गरबा के नए स्टेप्स और सुर-ताल सीख रहे हैं। 10-11 अक्टूबर को सवा लाख वॉट साउंड सिस्टम और म्यूजिकल बैंड के साथ फायनल रिहर्सल होगी। 12 से 18 अक्टूबर तक मुख्य गरबा महोत्सव आयोजित होगा। इस दौरान गुजरात की पारंपरिक थीम पर डॉडिया और गरबा की प्रस्तुतियां दी जाएंगी। इस बार प्रतिभागी अलग-अलग पारंपरिक परिधानों में गरबा करते नजर आएंगे। जम्बूरी मैदान पर भोजपाल महोत्सव मेला समिति द्वारा नवरात्रि के पावन पर्व पर धार्मिक आयोजन किए जा रहे हैं। मध्य प्रदेश की सबसे बड़ी झांकी बाबा केदारनाथ की भव्य झांकी का निर्माण किया जा रहा है। 85 फीट ऊंचे धाम में 11 से 20 अक्टूबर तक शहरवासियों को बाबा केदारनाथ के दिव्य दर्शन होंगे। आयोजकों के अनुसार करीब 55 लाख रूपए की लागत से यह झांकी तैयार की जा रही है। यह मध्यप्रदेश की बड़ी झांकियों में शामिल होगी।

नाइट क्लब, रेस्टोरेंट और रियल एस्टेट कारोबार घोटाले की निष्पक्ष जांच हो : कांग्रेस

प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मामले को लेकर मुख्यमंत्री को लिखा पत्र

भोपाल। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष जीतू पटवारी ने प्रदेश में नाइट क्लब,रेस्टोरेंट और रियल एस्टेट कारोबार से जुड़े कथित आबकारी घोटाले की निष्पक्ष जांच कराने की मांग की है। इस संबंध में उन्होंने शुक्रवार को मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव को पत्र लिखकर उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की निगरानी में स्वतंत्र विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित करने का आग्रह किया है। जीतू पटवारी ने पत्र में करीब एक हजार करोड़ रुपये के कथित घोटाले का उल्लेख करते हुए कहा कि मामले में आरोपी मोहित गोगिया के जांच एजेंसियों को दिए गए बयानों में कुछ अधिकारियों पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं। उनके मुताबिक,पूछाछ के दौरान पूर्व आईएसएस अधिकारी सीपी रायचुरा और तत्कालीन सहायक आबकारी आयुक्त टीपी रायचुरा पर वर्ष 2024-25 में शराब ठेकों और टेंडर प्रक्रिया के संबंध में कथित

तौर पर एक करोड़ रुपये लेने के आरोप लगाए गए हैं। इन आरोपों की पुष्टि जांच के बाद ही हो सकेगी। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि मामले में लगाए गए आरोपों को देखते हुए आबकारी ठेकों के आवंटन की प्रक्रिया और कथित वित्तीय लेन-देन की स्वतंत्र जांच जरूरी है। उन्होंने सवाल उठाया कि शराब दुकानों के ठेके आवंटित करने में निर्धारित नियमों और प्रक्रियाओं का पालन हुआ या नहीं। पटवारी ने यह भी आरोप लगाया कि मामले में भोपाल के कुछ कारोबारियों के नाम सामने आए हैं, जिनके संबंध वरिष्ठ नौकरशाहों और राजनेताओं से बताए जा रहे हैं। मुख्यमंत्री को लिखे पत्र में पटवारी ने पांच प्रमुख मांगें रखी हैं। उन्होंने पूरे प्रकरण की जांच उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की निगरानी में गठित स्वतंत्र एसआईटी से कराने का आग्रह किया है। साथ ही शराब ठेकों की निविदा प्रक्रिया, बैंक एफडीआर, टेंडर से जुड़े दस्तावेजों और कथित वित्तीय लेन-देन की जांच कराने की मांग की है।

सीएम डॉ.यादव ने हरदा जिला अस्पताल में बुजुर्ग महिला से ली स्वास्थ्य संबंधी जानकारी

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने कहा कि सरकार समाज के प्रत्येक वर्ग के साथ खड़ी है और उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तत्परता से कार्य कर रही है। इसी उद्देश्य से जनविश्वास अभियान के माध्यम से सरकार घर-घर पहुंच रही है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में मध्यप्रदेश निरंतर प्रगति कर रहा है। प्रदेश सरकार स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रत्येक वर्ग को राहत देने तथा बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए निरंतर योजनाएं संचालित कर रही है। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत शुक्रवार को मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने हरदा जिला चिकित्सालय पहुंचकर उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं का



जायजा लिया तथा मरीजों से चर्चा कर उनके उपचार एवं अस्पताल में मिल रही स्वास्थ्य सेवाओं की जानकारी प्राप्त की। मुख्यमंत्री ने जिला अस्पताल में आयोजित कार्यक्रम के दौरान अंधत्व निवारण कार्यक्रम के अंतर्गत स्कूली बच्चों को नि:शुल्क चश्मे वितरित किए। साथ ही क्षय उन्मूलन कार्यक्रम के

मुख्यमंत्री ने एक बुजुर्ग महिला से बातचीत कर उनकी कुशलक्षेम पूछी। मुख्यमंत्री डॉ यादव ने बुजुर्ग महिला से चर्चा करते हुए कुशलक्षेम पूछा,बुजुर्ग महिला ने बताया कि इलाज बहुत अच्छा मिल रहा है और अब पहले से आराम है। मुख्यमंत्री ने बच्चों से दुलार करते भी नजर आए। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने उपस्थित बच्चों के सर पर दुलार से हाथ फेरते हुए उनका भी हाल-चाल पूछा। सेवा संकल्प अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम के लिए मुख्यमंत्री डॉ.यादव बच्चों के बीच पहुंचे जहां उन्होंने बच्चों को नि:शुल्क चश्मे वितरित किए। मुख्यमंत्री द्वारा शासकीय कन्या शाला की कक्षा 12वीं की छात्रा कु. शिवानी, कु. छाया एवं शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय की छात्रा कु. मुस्कान को चश्मा वितरित किया।